★ ॐ ★

वशीकरण मन्त्र

यानी

मन्त्र भण्डार

—❀—

—सम्पादक

गोविन्द दास विनीत

—:०:—

मिलने का पता—
गर्ग एण्ड को०, थोक पुस्तकालय
खारी बावली, दिल्ली-६

मूल्य १।)

मुद्रक:—प्रताप प्रिंटिंग प्रेस, लाहौरी गेट, दिल्ली।

वशीकरण-मन्त्र-संग्रह

आदि-लेख

मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र

"मन्त्र; यन्त्र और तन्त्र"—यह तीनों शब्द वैदिक संस्कृत के हैं। अतएव कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि वैदिक काल से ही मान्त्रिक, यान्त्रिक और तान्त्रिक प्रचलन हुआ है, परन्तु मेरा अनुमान है कि यह तीनों विषय वैदिक काल से भी पूर्व प्रचलित थे, यदि कोल, भील और द्राविड़ आदि जातियों को इतिहासकार वैदिक काल से पूर्व का मानते हैं तो वे लोग अब भी उसी अपनी भाषा और रीति के अनुसार साधनायें करते हैं और कहना न होगा कि "सभ्य" कहलाने वाली जातियों की समता में अधिक तथा तात्कालिक सफलता प्राप्त करते हैं। कोई भी व्यक्ति अभी गौंडवाने के प्रान्त में जाकर इसका प्रत्यक्ष प्रमाण पा सकता है।

वेदों में अधिकतर मन्त्रों का ही बाहुल्य है, परन्तु वे सभी मन्त्र आत्म-कल्याण लोक और परलोक के हित की दृष्टि से रचे गए हैं। वे महानतम हैं और परम तत्व [ईश्वर] के अनुरोधक हैं, या यों कहिये कि उनमें इतनी शक्ति है जो अवश्य और अवध्य ब्रह्म को भी वशीभूत सा बना कर अपनी कामनायें पूर्ण करा सकते हैं, अतएव मन्त्र वह प्रभावशाली शब्द या शब्दसमूह कहा जा सकता है, जिसका नियमानुसार जाप करने से वांछित कार्य सफल हो जाता है।

यद्यपि सभी मन्त्र वैदिक नहीं, कुछ वैदिक काल के बहुत पीछे भी बनाये गये हैं और उनमें "देवी, हनुमान, भैरव" आदि के प्रति प्रार्थना या अनुरोध किया गया है। परन्तु पाठकों या साधकों को यह कदापि न भूलना चाहिए कि वे समस्त देवी देवता भी—चाहे देवी हों, चाहे आसुरी—उसी निराकार सर्व शक्तिमान्, सर्व गुणनिधान परब्रह्म की ही आंशिक शक्तियों के नाम हैं।

प्राणी मात्र का यह स्वाभाविक नियम है कि किसी काम के करने में वह जितने अंग या शक्ति की आवश्य-कता समझता है, उतने ही से काम लेता है। जैसे—देखने के लिये केवल आंख खोलने की आवश्यकता

है यदि दृश्य आँख खोलने पर दिखाई न दे, अर्थात् वह किसी ऐसी जगह हो, जहां बिला जाए, उसे देखा नहीं जा सकता तो पैरों से भी काम लेना होगा। किसी-किसी काम में हाथ, पैर, आंख, कान आदि सभी इन्द्रियों का काम आ पड़ता है। किसी में केवल बुद्धि का और किसी में केवल आत्मा का।

कहने का तात्पर्य यह है कि जैसा कार्य हो वैसा ही शक्ति का उपयोग किया जाता है। वे समस्त शक्तियां ईश्वर पूर्ण ब्रह्म की हैं और पूर्ण की समता में उसके किसी अंश पर अधिकार पा सकना सहज साध्य है। अतएव मन्त्रों के आचार्यों ने ईश्वर की विभिन्न शक्तियों के ही मन्त्र बनाए हैं। सम्पूर्ण ब्रह्म के नाम पर बनाये गए मन्त्रों द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को जीत कर उसी की प्राप्ति की जा सकती है तदर्थ वह इन छोटे मोटे कार्यों के लिये प्रयुक्त करना आवश्यक नहीं समझा जाता।

किसी प्रयोग या क्रिया का जो नियम निर्धारित किया गया है, उसे तन्त्र कहते हैं। जिस यन्त्र द्वारा अभीष्ठ कार्य की सिद्धि होती है, उसे तान्त्रिक यन्त्र समझना चाहिए। यन्त्र तन्त्र और मन्त्र का ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध है, जैसा किसी मशीन के चलाने में धातु, ज्ञान और कर्म-कौशल का। तीनों के बिना जैसे मशीन नहीं

चल सकती, वैसे ही इन तीनों के बिना अभीष्ट कार्य सिद्ध होना संभव है।

मन्त्रों का अर्थ और उनकी शक्ति

"ओ३म् नमो नारायणाय सर्व लोकान मम वशं कुरु कुरु स्वाहा"

यह एक सब लोगों को वश में करने का मन्त्र है। इसका अर्थ है—मैं नारायण को नमस्कार करता हूँ वह (नारायण) सब लोकों को मेरे वश में करें।

इस उदाहरण के लिखने से मेरा तात्पर्य यह है कि प्रायः सभी मन्त्र किसी देवता विशेष के प्रार्थना वाची होते हैं, जिनका अर्थ भी प्रायः वही निकलता है, जो प्रार्थी या साधक की कामना से सम्बन्ध रखता है।

शंका—यदि मन्त्र का अर्थ साधक की भावना का प्रार्थना रूप में प्रकट करना है, तो क्या कोई साधक अपनी भाषा के सीधे सादे शब्दों में उसे प्रकट नहीं कर सकता ? और क्यों उससे कार्य की सिद्धि नहीं हो सकतीं ?

समाधान—अवश्य यदि कोई मनुष्य शब्दों का मूल्य और प्रभाव जानता है, तो उसके द्वारा की गयी प्रार्थना के द्वारा भी कार्य सिद्ध हो सकता है और होता

भी है। गोस्वामी तुलसीदास जी कृत हनूमानाष्टक और हनूमान चालीसा भी तो सीधी-सादी हिन्दी भाषा में ही है; परन्तु मन्त्र काम देते हैं। श्री रामचरित मानस में स्थान-स्थान पर मन्त्रों का प्रभाव रखने वाली चौपाईयां हैं। जैसे···

१ ···"जाके सुमिरन ते रिपु नासा।
ताकर नाम शत्रुहन वेद प्रकासा।"···मारण

२···"गही बहोरि गरीब निवाजू।
सरल सबल साहब रघुराजू।"
सर्व संकट हरण

उपरोक्त चौपाईयां तो तत्काल ही जादू जैसा काम करती हैं। हाँ, आवश्यकता है···सात्विक प्रकृति, राम-भक्त की।

शंका···फिर क्या आवश्यकता है कि पुराने गढ़े गढ़ाये मन्त्रों को ही अधिक सन्मान दिया जाय?

समाधान···मान लीजिये कि आप वैद्यक करना चाहते हैं; और अभी उस विषय में कोई भी अनुभव नहीं रखते। तब आप ही बतलाइये कि प्रत्येक औषधि के गुण और प्रभाव तथा उनके मिश्रण आदि के नियम निकालने के लिए दो-चार युग व्यतीत करेंगे या किसी आचार्य

के बनाये हुए ग्रन्थ के द्वारा कुछ ही दिन में सुयोग्य वैद्य बन जाना पसन्द करेंगे। मेरी समझ में तो आपको दूसरी रीति पसन्द आवेगी। इसमें समय भी अधिक न लगेगा और अनुभव प्राप्त करने में किसी प्रकार की हानि की भी सम्भावना नहीं है। इस तरह 'मन्त्र विद्या' में जो साधन आदि प्राचीन आचार्यों ने निश्चय करके अद्भूत रूप में विश्व के सामने प्रकट किये हैं। उनके अनुसार काम करने से हमें सहज ही में सफलता मिल सकती है।

शंका—मगर प्रार्थना तो हृदय से होनी चाहिये, चाहे जैसे शब्दों में क्यों न हो, सफलता अवश्य देगी।

समाधान—यदि वह निष्काम भाव से केवल भक्ति या मुक्ति के लिये की जाय तो अवश्य ही सफलता मिल सकती है। परन्तु सकाम भावना से दवेच्छा के विरुद्ध की गयी प्रार्थना, प्रार्थना नहीं, वरन एक प्रकार से उस पर दबाव डाल कर, उसे वश में करना और उससे अपनी इच्छानुसार काम करना है, इसी लिए ऐसी प्रार्थनाओं का नाम मन्त्र रखा गया है। अब आप ही विचार करें कि अगर हम किसी से जबरन काम लेने की कोशिश करें तो क्या वह सहज ही में बन्धन पसन्द करेगी? कभी नहीं। आप की जहां जरासी भी भूल

पायगा, वह हाथ से निकल जायगा और सम्भव है कि आपको भी कोई न कोई हानि पहुँचा जाय।

शंका...मगर कभी कभी इन मन्त्रों से भी तो सफलता नहीं मिलती।

समाधान...इसमें मन्त्रों का दोष नहीं। मन्त्र सम्बंधी साधन-क्रिया में किसी प्रकार की भूल या कमी हो जाने के कारण ही मन्त्रों में सिद्धि दिखाई नहीं पड़ती।

प्रश्न...साधन-क्रिया से क्या तात्पर्य है।

उत्तर...साधक को प्रत्येक प्रकार के साधन-काल में ब्रह्मचर्य, सत्य, त्याग, भक्ति, ध्यान, यम और नियम का पालन करना अनिवार्य है, साथ ही उन सम्पूर्ण नियमों का भी अक्षरशः पूर्ण करना अनिवार्य है, जो उस मन्त्र के विषय में मन्त्र के साथ दिए गए हों।

प्रश्न...मान लीजिए कि यह सारी साधनायें करके सफलता मिल सकती है, तो इसमें क्या कोई विज्ञान का सिद्धान्त घटित होता है।

उत्तर...किसी मन्त्र को बार-बार दुहराने का आशय यह है कि अपनी भावना, शक्ति में ऐसा आकर्षण पैदा

कर दिया जाय, जो अभीष्ट के भाव-स्थल हृदय पर अपना प्रभाव डाल सके। जैसे विद्युत-शक्ति का प्रभाव दूसरी विद्युत-शक्ति पर पड़ता है, वैसे ही आत्म-शक्ति दूसरी आत्मा पर अपना प्रभाव डाल कर उसे तदात्म्य बना लेती है। क्योंकि समस्त आत्मायें एक ही तत्व की हैं। आवश्यकता है, कि उनमें सामञ्जस्य तथा आकर्षण उत्पन्न करने की, जिससे वह चुम्बक और लोहे की तरह एक दूसरे की ओर खिच सके।

इसी तदात्मीयता प्राप्त करने के लिए कोई अनुष्ठान करता है, कोई जप नाम से उसे पुकारता है। कोई अन्य प्रयोगों द्वारा उसे प्राप्त करता है।

यह विषय केवल हिन्दुओं के यहां ही मान्य नहीं वरन प्रत्येक धर्म और प्रत्येक भाषा वाले अपने-अपने नियमानुसार प्रयोग करते हैं। मुसलमान वजीफा करते हैं और उसी के बल पर गन्डा आदि बांधा करते हैं। मैस्मिरेजिम भी इसी प्रकार का एक प्रयोग है।

शंका···मगर आजकल इन विषयों में सफलता होते बहुत ही कम देखा जाता है।

समाधान···इस का कारण है···वर्तमान समाज के दूषित भाव, स्वार्थ, भ्रम, प्रलोभन, आतुरता और नियमों

का पूर्णरूपेण पालन न करना। जिसके कारण कार्य सिद्धि की सफलता तो दूर कभी-कभी उलटी हानि भी उठानी पड़ती है गलत तरीके से साँप को पकड़ने में सम्भव है कि वह फन भी मारदे।

वशीकरण

देव, दानव, मनुष्य, यक्ष, राक्षस, पितर, पशु, पक्षी या किसी दैविक या भौतिक शक्ति को अपने वश में कर लेना ही वशीकरण है और जिन प्रयोगों, साधनों या उपायों से किसी को वश में किया जाता है, उसे वशीकरण प्रयोग, मन्त्र, यन्त्र या तन्त्र कहते हैं।

प्रश्न—क्या किसी को वश में करने के लिये भी योगादि की आवश्यकता है।

उत्तर—जी हां! संसार में मनुष्य के ऐसे बीसियों काम हैं, जिन्हें वह किसी दूसरे के द्वारा करना चाहता है, परन्तु वह तुम्हें या तुम्हारी इच्छा को नहीं जानता। या, जानता है तो तुम्हारी इच्छानुसार काम नहीं करना चाहता। संभव है—मनुष्य-वर्ग अनुनय-विनय से मान भी जाय, परन्तु एक विषधर जो कि आपकी सूरत देखते ही फन फैलाकर काटने को तैयार हो जाता है बिना नाद विद्या के कैसे मोहित हो सकता है। फिर

मोहित करने के बाद ही आप युक्ति-पूर्वक उसे पकड़ सकेंगे।

प्रश्न···साधारणतया मनुष्य-वर्ग तो किसी के सौन्दर्य मिष्ठ-भाषण, रूप, माधुर्य, यौवन, बल, पराक्रम सद्गुण, सदाचार, सद्व्यवहार, कला, धन-वैभव पर ही मुग्ध हो जाता है। उसे वश में करने की आवश्यकता ही क्या है ?

उत्तर···मान लीजिये कि इनमें से आप में उस गुण की कमी है, जिसके द्वारा तुम्हारा अभीष्ठ (पुरुष या स्वामी) तुम्हारे वश में हो सकता था। या आप उससे कोई ऐसा काम लेना चाहते हैं, जो आपके लिये अत्यावश्यक है, परन्तु उसके स्वार्थ, सन्मान, मर्यादा या इच्छा के विरुध है। या वह निराभिमानी है और आपकी बात भी नहीं सुनना चाहता। तब तो आपको कोई न कोई युक्ति लगानी ही पड़ेगी। बस उसी युक्ति का नाम वशीकरण प्रयोग समझ लीजिये।

प्रश्न···ऐसी दशा में मनुष्य को क्या करना चाहिए ?

उत्तर···ऐसी दशा में मनुष्य को यन्त्र, मन्त्र तन्त्रादि से काम लेना होगा। परन्तु साधन से पूर्व उसे निम्नलिखित बातों का निश्चय संकल्प कर लेना होगा और

साधन काल में यह भी बातें व्यवहार में लानी होंगी। तभी सिद्धि प्राप्त होगी। अन्यथा असफलता के साथ-साथ हानि की भी संभावना है।

१···अपने मन्त्र, प्रयोग तथा क्रिया पर पूर्ण विश्वास रखे और यह समझता जाय कि सफलता मेरे निकट आ रही है।

२···साधन—काल में संयम, इन्द्रिय-निग्रह तथा एकाग्र चित्त रखे। मांसाहारी, तामसाहार, अत्याहार, असत्य, लोलुपता तथा रजोगुण आदि वर्जित हैं।

३...पृथ्वी, काष्ट-शैया [तख्त] मृग-चर्म या कम्बल पर सोना चाहिये।

४···क्षौर-कर्म [बाल बनवाना और नाखून कटवाना] वर्जित है।

किसी योग्य आचार्य से पहले मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना सीखे और फिर जप काल में इतनी जल्दी न करे कि उसका उच्चारण कुछ का कुछ हो जाय।

६···प्रत्येक प्रयोग के लिये जितना साधन, जिस प्रकार कहा गया है, ठीक उसी तरह और उतना ही करना चाहिये।

७···प्रयोग से पूर्व भी आत्म-शुद्धि के लिये तत्सम्बन्धी मन्त्रों का जाप किया जाय।

८—साधक को धैर्य और दृढ़ता के साथ साधना करनी चाहिये।

९—साधक को किसी न किसी देवता का इष्ट अवश्य करना चाहिये। बिना देवी-बल के सफलता की आशा भूलकर भी न करनी चाहिये।

१०—साधक को उचित है कि इस विषय को किसी किसी योग्य गुरू से सीखकर पीछे उसका साधन करें।

षट् प्रयोग और उनके देवी-देवता

यन्त्र, मंत्र, तंत्रों के द्वारा प्रायः छः कार्य सिद्ध किये जाते हैं; उन्हीं की क्रियाओं को प्रयोग कहते हैं।

१—शान्ति-प्रयोग-क्रूर-ग्रहों के प्रभाव को दूर करने के लिये जो प्रयोग किया जाता है, उसे शान्ति प्रयोग कहते हैं।

वशीकरण—जिसके द्वारा चराचर विश्व की कोई भी शक्ति वश में की जाती है।

३—स्तंभन-किसी शक्ति की गति या वेग को रोक देना।

४—विद्वेषण किन्हीं दो प्रेमी वा प्रेमिकाओं के भाव बदल कर उनमें फूट डलवा देना।

५—उच्चाटन-किसी पुरुष या स्त्री का उससे चिर परिचित स्थान या समाज छुड़वा देना।

६…मारण-किसी भी प्राणी की बिना अस्त्र, शस्त्र, मृत्यु कर देना।

इन्हीं षड् प्रयोगों के लिये प्राचीन तथा नवीन मंत्र यंत्र, तंत्र बनाये गये हैं। यहां पर केवल वशीकरण का ही उल्लेख किया जाता है।

शान्ती-प्रयोग में रति देवी की आराधना करनी चाहिये। इसी प्रकार वशीकरण में सरस्वती, स्तंभन में लक्ष्मी, विद्वेशा में ज्येष्ठा, उच्चाटन में दुर्गा और मारण में भद्रकाली का पूजन करना उचित है।

योगायोग विचार

किसी भी प्रयोग को सिद्ध करते समय दिशाशूल, योगिनी, चन्द्रमादि ग्रह तिथि तथा नक्षत्रादि का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

दिशाशूल

दिशाशूल का निवास सोमवार तथा शनिवार को पूर्व की ओर होता है और गुरुवार को दक्षिण की ओर। इसलिए इन तीनों वारों में वशीकरण प्रयोग सिद्ध करने

बैठना चाहिए। क्योंकि साधक को वशीकरण सिद्ध करने के लिये पूर्व की ओर मुंह करके बैठना बताया गया है और दिशाशूल का सामने या दायीं ओर होना उचित नहीं।

योगिनी

इसी प्रकार योगिनी भी बायें या पीठ पीछे रहनी चाहिये और योगिनी का निवास किसी भी पंचांग से ज्ञात कर लेना सहज होगा।

सिद्धयोग

यदि प्रतिपदा, षष्टी और एकादशी की तिथि भृगु वार को हो, द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी बुधवार को हो, तृतीया, अष्टमी, और त्रियोदशी मंगलवार को हो, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी शनिवार को हो, तथा पंचमी, दशमी, पूर्णिमा या अमावस्या गुरुवार को हो तो सिद्धयोग समझना चाहिये। उस दिन का आरम्भ किया हुआ कार्य अवश्य ही सिद्ध होगा।

ग्रह

इसी प्रकार प्रयोग से पूर्व अपने ग्रह, नक्षत्र, चन्द्रमादि का भी पता लगा लेना उचित है। ध्यान रहे कि चन्द्रमा दांय या सन्मुख अच्छा होता है। चौथा,

छठवां, आठवां, बारहवाँ ग्रह प्रत्येक हानिकारक होता है।

आसन

वशीकरण—प्रयोग सिद्ध करने के लिए मेढ़े के चर्म का आसन सर्वोत्तम बतलाया गया है।

आरम्भिक साधन

वशीकरण...प्रयोग सिद्ध करने से पूर्व साधक को निम्न प्रकारेण तत्सम्बन्धी सामर्थ्य प्राप्ति कारक साधन करना परमावश्यक है—

—ओ३म् परब्रह्म परमात्मनं नमः—

उत्पत्ति स्थिति प्रलय कराय ब्रह्म हरि हराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय २ दत्तात्रेयाय नमः तन्म सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को दस हजार की संख्या में जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर किसी भी प्रयोग या कार्य के आरंभ में इसे १०८ बार जप करना चाहिये।

यदि वशीकरण प्रयोग सिद्ध करना हो तो उपरोक्त मन्त्र के अतिरिक्त निम्नलिखित साधन भी परमावश्यक है...

'ओ३म् रक्तचामुण्डे सर्व जनान्मोहय मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र को सवा लक्ष जप लेने से वशीकरण मन्त्र

में सिद्धि प्राप्त होती है।

या—

'ओ३म् नमो नारायण सर्व लोकान् मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र को एक लाख बार जपने से सिद्धि होती है।

या—

'ओ३म् उड्डामरेश्वराय सर्व जगान्मो हनाप अँ आँ इँ उँ ऋँ ऋँ घट स्वाहा।'

इस मन्त्र को सवा लाख जपने से सिद्धि होती है।

या—

'ओ३म् नमो भगवते उड्डामरेश्वगाय मोहय मित्र ठः ठः स्वाहा'

इस मंत्र को पचास हजार जपने से सिद्धि होती है।

उपरोक्त मंत्रों में से किसी एक को एकाग्र चित्त से, एकान्त में, इष्ट देव का ध्यान किये हुए केवल श्वांस और होठों के सहारे जपना चाहिये। आवाज न करनी चाहिये। जप के लिये १०८ मनके वाली रुद्राक्ष या मूंगे की माला होनी चाहिये।

अब विभिन्न प्राणियों को वश में करने के प्रयोग का संग्रह किया जाता है, जो विभिन्न तन्त्र-मन्त्र शास्त्रों से दिये हैं।

विश्व-वशीकरण

१…'ओ३म् नमः सर्वलोक वशं कराय कुरु कुरु स्वाहा'

उपरोक्त मन्त्र का एक लाख का जप करके, जब पुष्य नक्षत्र हो, तब इसी मंत्र की आवृत्ति करते हुए विषखोपरा की जड़ को उखाड़ कर हाथ में बांधे…

२—'ओ३म् कामेश्वराय नमः सर्व लोक वशं कुरु कुरु स्वाहा'

उपरोक्त मंत्र का एक लक्ष जप तथा कमल पत्रों का हवन करना चाहिये। फिर बेल (बिल्व) की पत्ती और बिजौरे छिलके को पीसकर इसी मन्त्र को जपता हुआ मस्तक पर तिलक लगाये।

कपिला गौ के दूध में पान तथा तुलसी के पत्र पीस कर भी तिलक किया जा सकता है।

३…'ओ३म् नमो भगवती मंगलेश्वरी सर्व सुख राजिनी सर्व धर्मातिंगी कुमारिके लघु लघु वशं कुरु कुरु स्वाहा'

उपरोक्त मंत्र का २० हजार बार जप करना चाहिये।

४…'ओ३म् नमो भगवते रुद्राय सर्व जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा'

इस मन्त्र को सवा लाख जप कर कमल-पत्र तथा केसर की आहुति दे और सिद्धि के पश्चात् नीचे लिखे प्रयोगों में से किसी एक प्रयोग को इस मंत्र का १०८ बार जप करके काम में लाये, सफलता मिलेगी।

(अ) कड़ु लौके के बीजों के तेल में कपड़े की बत्ती डालकर काजल बनाया जाय और उसे आंख में लगाया जाय।

(ब) अपा मार्ग, काला भांगरा और लाजवन्ती-इन तीनों को इकरंगी गाय के दूध में पीस कर तिलक करे।

(स) बेल-पत्र और दोनों चंदन कपिला गाय के दूध में घिस कर तिलक करना चाहिये।

(द) तुलसी-पत्रों को साया में सुखा ले। फिर अश्व-गन्ध और भंग उन्हीं के समान तोल में लेकर कपिला गाय के दूध में पीसे और गोलियाँ एक माशे के लगभग वजन में बनाले। इन गोलियों को इक्कीस दिन सुबह-शाम खाये।

(य) तुलसी-पत्र और सहदेवी को पान के रस में घिस कर तिलक करे।

(ह) गूलर पुष्पों की बत्ती बनाकर कपिला गौ के घी में डाले और काजल बनाकर आंख में लगाये।

(ल) सफेद आक की जड़ और सफेद चंदन पीस कर सर्वाङ्ग लेप करे।

५...'ओ३म् नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन संमोहाय ज्वल ज्वल प्रज्वलाय सर्व जनस्य हृदयं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा'

इस मंत्र का एक लाख बार जाप करे।

६...'ओ३म् नमो नमो कद सम्बारीन सर्व लोकवश्य करी स्वाहा।'

इस मंत्र का १०८ बार जप करे।

७...'ओ३म् नमो कन्दर्प शर विजालिनी मालिनी सर्वजगत् वशं कुरु २ स्वाहा।'

इस मंत्र को सवा लाख बार जप करके सिद्धि होने के पश्चात्।

(अ) तुलसी-पत्र, पान और चंदन पीस कर इसी मंत्र को एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके तिलक लगाना चाहिये।

(ब) अथवा—पुष्य नक्षत्र में सहदेवी और अकरकरा को बकरी के दूध में पीस कर अभिमन्त्रित करके तिलक लगाये।

(स) अथवा-अपमार्ग, केशर, लाजवन्ती को कपिला गौ के नवनीति में पुष्य नक्षत्र के समय पीसकर तिलक करे।

८…'ओ३म् नमो नारायण भगवते वासुदेवाय सर्व लोकान् मम वशं कुरु कुरु स्वाहा।'

यह मन्त्र बीस हजार बार जपने से सिद्ध होता है। फिर…

(अ) श्वेत अपराजिन की जड़ और गोरोचन पीस कर इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाना चाहिये।

(ब) अथवा…अपमार्ग के बीज सफेद बकरी के दूध में घिस कर १०८ बार अभिमन्त्रित करके तिलक करना चाहिये।

राज-वशीकरण

१—'ओ३म् ह्रीसः अशुक्रमेवश मानस्य स्वाहा।' पहले इस मन्त्र को सवा लाख बार जपकर सिद्ध

करे। फिर चन्दन कपूर, तगर को बकरी के दूध में घिस कर इसी मन्त्र के द्वारा (१०८) बार अभिमन्त्रित करके तिलक करके राजा से मिलने जाय, राजा वश में हो जायगा।

या—

चन्दन, कुंकुम, गोरोचन, कपूर को गौ के दूध में पीस कर इसी मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाये।

पुरुष-वशीकरण

यदि स्त्री नीचे लिखे हुए मन्त्र को सवा लाख बार जप करके सिद्ध करले और फिर इसी मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित किये हुए गोरोचन तथा मछली के पित्ते के मिश्रण का पुरुष को तिलक लगादे तो वह पुरुष वश में हो जायगा!

मन्त्र

'ओ३म् काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।'

२…यदि नीचे लिखे हुए मन्त्र को सवा लाख बार जप कर सिद्ध कर लिया जाय। फिर जिस पुरुष को वश में करना हो, उसकी मूर्ति मोम की बनाकर उसी पर उसका नाम लिख दिया जाय! फिर इसी मंत्र को जपते

हुए मूर्ति को आग द्वारा पिघलाया जाय तो वह पुरुष वश में हो जायगा।

मन्त्र

'ओ३म् नमो भगवते स्चि चाण्डालिनी नमः स्वाहा।'

३—यदि नीचे लिखे मंत्र को सवा लाख बार जप कर सिद्ध कर लिया जाय और फिर सिरस के दस हजार आहुतियों का हवन करे और 'अमुक' शब्द की जगह जिसका नाम ले, वह पुरुष वश में हो जाय।

—मन्त्र—

ओ३म् चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानाय अमुकं स्वाहा।'

पत्नी द्वारा पति-वशीकरण

मन्त्र

१—'ओ३म् नमो भाष्कराय त्रिलोकात्मने अमुक मही पति मे वशी कुरु कुरु स्वाहा।'

यह मंत्र दस हजार बार विधि पूर्वक जपने से सिद्ध हो जाता है। इसे सिद्ध करके नीचे लिखे प्रयोगों में से किसी एक को इसी मँत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके अपना अभीष्ट सिद्ध किया जा सकता है।

१—खंजरीठ का मास शहद में मिला कर लेपन करना चाहिये।

२—गोरोचन, मछली का पित्ता, मोर-शिखा, घी और शहद पीसकर लेप करने के पश्चात् मैथुन कराना चाहिये।

३—कमल-पत्र पर अपने पति का नाम गोरोचन से लिखे और शनिवार कृतिका नक्षत्र में उसे पीसकर तिलक करना चाहिये।

४—कुंकुम, चंदन, कपूर और तुलसी-पत्र गाय के दूध में पीस कर तिलक करना चाहिये।

५—अनार की जड़, पत्ता छिलका, दाना और फूल को सरसों के साथ पीस कर लेपन करने के पश्चात् संभोग कराये।

६—कुलथी, बेलपत्र, गोरोचन और मनशिला को पीसकर तांबे के बर्तन में सात दिन-रात तेल में पकाने के पश्चात् लेप करे और फिर मैथुन कराये तो पति सदैव के लिये वशीभूत हो जायगा।

२...'ओ३म् हुँ हुँ स्वाहा'

इस मंत्र को दस हजार बार जपने से सिद्धी हो जाती है। फिर लाल करवार की लकड़ी मृगशिरा नक्षत्र में लाकर

नौ अंगुल तोड़ ले और ऊपर लिखित मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके जिस पुरुष का नाम लेकर पृथ्वी में गाड़ी जायगी, वही [विशेष कर पति] वश में हो जायगा।

३…'ओ३म् नमो महा यक्षिराये मम पति वशं कुरु कुरु स्वाहा।'

यह मंत्र सवा लाख बार विधि-पूर्वक जपने से सिद्ध होता है। फिर तगर, कूट जटामांसी और राई के फूल समान भाग में लेकर उनका चूर्ण करे तथा इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके पुरुष पर डाल दे।

या—

गोरोचन, यो कानि रुधिर और मैन्शिल बराबर पीस कर इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके पुरुष को तिलक करे।

४…'ओ३म् चिम् चिम् स्वाहा।'

यह मंत्र पच्चीस हजार बार जपने से सिद्ध होता है। फिर इसी मंत्र द्वारा सात बार जल को अभिमंत्रित करके जिसका नाम लेकर पान किया जायगा, वही वश में हो जायगा। चाहे अपना पति हो, या न हो।

५—'ओ३म् अमूली महामूली घुड्ड सर्व संक्षेत्र जेनो यद्भम्भेयः स्वाहा।'

इस मन्त्र को जिसका नाम लेते हुए एक मास तक निरन्तर जपा जायगा, वही वश में हो जायगा।

विविध मन्त्रावलि

१...'ओ३म् चिट चिट चान्डाली महाचान्डाली भुवनेश्वरी त्रिलोक कल्याण कारणी अमुक मे वश्या मानाय स्वाहा।'

यह मन्त्र निरन्तर सवा लक्ष बार जपने से सिद्ध होता है। अमुक के स्थान पर अभीष्ट पात्र का नाम लेना चाहिये और फिर उसी का नाम ताड़-पत्र पर गोरोचन से लिखकर जल तथा दूध मिला कर उसमें डाल दे एवं उसे औटाये तो स्त्री, पुरुष राजा आदि कोई भी क्यों न हो, वश में हो जाता है।

भद्रकाली कवच

२...'क्रीं क्रीं क्रीं उग्र प्रभे विकट दंष्ट्रे पर पक्षं मोहय मोहय सर्व जगद्वश मानय ओ३म् नमः स्वाहा।'

उपर्युक्त मन्त्र भद्रकाली कवच कहलाता है। इसे भोज पत्र पर गौरोचन से लिखकर सोने या तांबे के तावीज में रखे और गले या दायीं भुजा में धारण करे तो विश्व वशीकरण हो। किन्तु ध्यान रहे कि इसे पहले सवा लाख जप कर सिद्ध कर लिया जाय और इसी से १०८ बार

अभिमंत्रित करके इसे भोजपत्र पर लिखकर धारण किया जाय ।

शिव मन्त्र

३–'ओ३म् भवाय जल भूर्त्तये बटुकात्मने शिवाय नमः ।'

इस मन्त्र के द्वारा शिव-लिंग को अर्घ्य दे तथा आचमन कराये और फिर स्नान कराते हुए निम्नलिखित मन्त्र पढ़े ।

'संकल्प उद्येत्यादि अमुकस्या ऽ मुकवशीकरणाय शत तोलक परिमित घृतेन मधुनावा बटुकात्मक शिव लिंग स्नाप्यामि ।'

फिर पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए शिव-लिंग पर पुष्प, बिल्व-पत्र, अक्षत, चन्दनादि चढ़ाये तथा दूसरे मन्त्र को पढ़ते हुए पुंगीफल, धूप, दीप नैवेदय आदि समर्पण करे। तत्पश्चात् घृत व राई से १००८ आहुतियां देकर हवन करने से वशीकरण सिद्ध होता है ।

मोहन कवच

४...'ओ३म् क्रूं कीं क्रूः स्वाहा विवादे पातु मां सदा । क्लीं दक्षिण कालिका देवतायै सभा मध्ये जय प्रदा । ह्रीं कीं कीं क्लीं त्रिलोक्यं वश मानाय ओ३म् नमः स्वाहा ।'

उक्त मोहन-कवच को विधि पूर्वक सवा लक्ष जप करके भोज-पत्र पर गोरोचन से लिखना चाहिए। फिर इसी मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके सोने या तांबे के ताबीज में बन्द करके शिखा, दायीं भुजा या कंठ में धारण करना चाहिये।

इस कवच से न केवल विश्व-वश में होगा, अपितु साधक सदैव निरोग, प्रसन्न, धनी, विजयी और सिद्ध कार्य रहेगा

षोडषी-कवच

५...उग्रा में हृदयं पातु कण्ठः पातु महेश्वरी।
उज्जटा नयने पातु कर्णौं च विन्ध्यवासनी॥
ललाटे विंशाखापातु शाकिनी राकिनी तथा।
लाकिनी बाहु युग्मं मे पादौ दिक्कर वासिनी॥
अन्यान्यंगं प्रत्यंगानि षोडषी पातु सन्ततम्।
धनदं भोगदं देवि आयुरा रोग्य कारणम्॥
यशस्यं नर नार्यस्तु मनो मिलन कारणम्।
मोक्षदं विघ्ननाशंच नर नारी वशं करम्॥

उपरोक्त षोडषी कवच का विधि-पूर्वक प्रति दिन जप करने से सफलता मिलती है।

इसी मन्त्र को गौरोचन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर शिखा, दक्षिण बाहु या गले में बांधने से वशीकरण के सिवा सब प्रकार के भोगों की प्राप्ति, यश-प्राप्ति, आरोग्यता की प्राप्ति और यहां तक कि मोक्ष-प्राप्ति भी हो सकती है।

६...'ओ३म् नमः कामाख्या देवी अमुकी मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

यह मन्त्र सवा लाख बार जपने से सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर नीचे लिखे प्रयोगों में से किसी एक को इसी मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपना कार्य सिद्ध करे।

(अ) गाय और पुरुष के दाँत को लेकर तेल में पकावे और फिर उस तेल से तिलक करे।

(ब) काले सांप का फन सुखा कर पीस ले और उसको आग में डालते हुए उसका धुआं अपने शरीर को लगते हुए अपने अभीष्ट का नाम लेता जाय।

(प) सुदर्शन की जड़ पुष्य नक्षत्र, रविवार को लाये और उसे कपूर तथा तुलसी-पत्रों में मिलाकर पीस ले। फिर किसी कपड़े की बत्ती बनाकर उस पर उन तीनों पिसी हुई वस्तुओं को लपेट दे। तत्पश्चात् विष्णुकांता के

तेल में उस बत्ती को भिगोकर काजल बनाये। ऐसे काजल को आँख में लगाने से राजेश्वर भी वशीभूत हो सकता है।

(ज) राई को पीस कर उसकी पिट्ठी सी बना ले। उसके द्वारा अभीष्ट स्त्री की मूर्ति बनाये और उस मूर्ति को बांयें पैर से आग में जलाये तो सात दिन में स्त्री वशीभूत हो जायगी।

(ह) एक रेशमी वस्त्र पर तालीस, कूट, तगर को पीस कर लेप करके उसकी बत्ती बनाले और मनुष्य की खोपड़ी में तेल डाल कर उस बत्ती से काजल बनाये। इस काजल को लगा कर जिनकी ओर देखा जायगा वही वशीभूत हो जायगा।

(म) बिल्व-पत्र और बिजोरे के पत्तों को बकरी के दूध में पीस कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

(ल) लाजवन्ती, चिरचिटा, बहेड़ा, विष्णुकांता और चाँडाली लता को गौ के दूध में पीस कर किसी कपड़े पर लपेट ले। उस कपड़े को बत्ती बनाले। कमल की डंडी में से धागा निकाल कर उस बत्ती से लपेट दे। फिर मनुष्य की खोपड़ी में घी डाल कर उस बत्ती से काजल बनाले। यह काजल लगाने से अभीष्ट वश में हो जाता है।

काजल चतुर्दशी की रात में भगवती देवी का पूजन करके बनाना चाहिये।

मोहन प्रयोग

'ओ३म् ह्रीं कालि कपालिनी घोर नादिनि विवं। विमोहय जगन्मोहय सर्व मोहय ठः ठः ठः स्वाहा।'

ऊपर लिखे हुए मंत्र का एक लाख बार जप करने से सिद्धि होती है। इसको सिद्ध करके निम्न प्रयोगों में से किसी एक को काम में लाये।

(अ) अपामार्ग, भृङ्गराज लाजवंती और सहदेवी को पीस कर इसी मंत्र से अभिमंत्रित करके तिलक करना चाहिये।

(ब) गूलर के फूल की बत्ती को घी में भिगो कर कज्जल बनाये और आंख में लगाये।

(स) सफेद अर्क की जड़ और सिन्दूर दोनों को केले के अर्क में पीस कर तिलक लगाये।

(द) तुलसी के बीजों को पीस कर उसको सहदेवी के रस में घोटे और तिलक लगाये।

(य) सफेद घुंमची और ब्रह्म-दंडी की जड़ पीस कर शरीर पर लेप करे।

(नोट) प्रत्येक रोग को उपरोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करना चाहिये।

आकर्षण-प्रयोग

'ओ३म् नमो काम देवाय अमुकास्या कर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।'

यह मन्त्र सवा लाख बार यथा विधि जपने से सिद्ध हो जाता है। सिद्धि के पश्चात् निम्नलिखित प्रयोगों में से किसी एक को इसी मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपना अभीष्ट प्राप्त करें। "अमुक" के स्थान पर उसका नाम लेना चाहिये, जिसे साधक अपनी ओर खींचना चाहता है।

(अ) जिस स्त्री को वश में करना हो, उसके बांयें पैर के नीचे की मिट्टी लेकर अपनी अनामिका अंगुली के लहू में साने और उस मिट्टी से मूर्ति बना कर मूर्ति पर उस स्त्री का नाम लिखे। नाम भी रक्त से ही लिखना चाहिये। फिर उस मूर्ति को मूत्र-स्थान में डाल कर उस पर सदैव पेशाब करता रहे। दूर से दूर होने पर भी वह स्त्री साधक के पास आ जायगी।

(ब) अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष का बांदा लाकर बकरी के पेशाब में पीसे। जिस स्त्री पुरुष या पशु, पक्षी

के सिर पर उसे डाला जायगा, वही आकर्षित हो जायगा।

[य] काले धतूरे के पत्तों के रस में गौरोचन पीस कर उससे कनैर की लेखनी द्वारा उपर्युक्त मन्त्र भोजपत्र पर लिखे, अभीष्ट का नाम भी लिखे। फिर उसे खदिर के अंगारों से आंच दे तो अत्यन्त दूर होने पर भी आकर्षण होगा।

[ज] मनुष्य की खोपड़ी पर गौरोचन वा केशर से उप-रोक्त मन्त्र लिखे फिर खैर की लकड़ी के अंगारों से उस खोपड़ी को आँच दे तो अवश्य सफलता होगी।

[ल] अपनी अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र पर उपरोक्त मन्त्र लिखे। तथा अभीष्ट का नाम भी और फिर उसे शहद में डाल दे। अवश्य सिद्ध होगी।

तन्त्र माला

१—अर्जुन वृक्षस्य वांदांच गृहीत्वाहिमे विशेषतः।
अजा मूत्रेण संपिष्ट वा यस्य शिरसि निक्षिपेत॥

[अर्थ] अर्जुन वृक्ष [कवां] का वांदा लाकर बकरी के पेशाब के साथ पीसे और जिसके सिर पर भी छिड़क दे, वह वशीभूत हो जायगा।

२—मनः शिला प्रियंगुश्च तगरं तगरं नाग केशरं ।
आसुरी पुष्प संयुक्तेन सूक्ष्म चूर्णन्तु कारयेत ॥

अथवा

चिता भस्म वचा कुष्ठं कुकुमं रोचनं समम् ।
चूर्णस्त्री शिरसि क्षिप्तं वशीकरण मद् भुतम् ॥

(अर्थ) मैनशिल, मालकांगनी, तगर, नाग केशर और राई के फूलों को मिलाकर पीस लें ।

अथवा

चिता की भस्म, वच कूट चन्दन और गोरोचन के समान भाग लेकर चूर्ण करलें और जिस स्त्री के सिर पर डाल दे, वह वशीभूत हो जाय ।

३—काक जंघा वचा कुष्ठं शुल्क शोणित मिश्रितम् ।
दत्तेतु भोजने वाला वशीकरण मद्भुतम् ॥

(अर्थ) काक जंघा, वच, कूट को पीसने के पश्चात् अपने वीर्य तथा रुधिर में मिलाकर भोजन के साथ स्त्री को खिला दिया जाय तो वह स्त्री वश में हो जाती है ।

४—गोरोचनं वंश नेत्रं मत्स्यस्थ चित्तं च कुँकुमम् ।
चन्दनं काकं जंघा च भूलं भाग समंनयेत् ॥
वाप्यादि कज्जलेनैव पेवयित्वा कुमारिकाम् ।
हस्तेन गुटिकां कृत्वा छायायां च विशोपयेत् ॥

ललाटे तिलकं कुर्यात् यः पश्यति वशी भवेत् ।

(अर्थ) गौरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्ता, केशर, चन्दन और काक जंघा की जड़ समान तोल में लेकर बावली के जल में कन्या के हाथ से पिसवा कर गोलियाँ तैयार करावे और उनको छाया में सुखालें। फिर उन गोलियों में से एक या आवश्यकतानुसार उनको घिस कर तिलक करे और फिर जिसकी ओर देखे, वही वशीभूत हो जाय।

रजस्वला स्वरुधिरं गौरोचन समन्वितम् ।
तिलकं कृत्वा दर्शनात्पुरुषो याति वश्यं ताम् ॥

(अर्थ) यदि रजस्वला अपने रुधिर को जो रजस्वला की दशा में निकलता है गौरोचन में मिलाकर अपने ही माथे पर तिलक करे, और फिर जिसकी ओर भी देखे, वही वशीभूत हो जाय।

उशीरं तगरं कुष्टं मुस्तं सिद्धार्थ मेव च ।
आसुरी पुष्प संयुक्तं सूक्ष्म चूर्णं च कारयेत् ॥

(अर्थ) खस, तगर, कूट, नागरमोथा और राई के फूलों का चूर्ण करके जिसे सुंघा दिया जाय, वही वश में हो जाता है। किसी-किसी का ऐसा मत है।

भोजन

'ओ३म् कट विकट घोर रूपिणी स्वाहा।'

(अर्थ) यह मन्त्र सवा लाख बार विधि पूर्वक जपने से सिद्ध होता है। फिर इसी को पढ़ते हुए चावल पकाये जायें और उनको अपने अभीष्ट का नाम लेते हुए खायें, ऐसा सात दिन होने से अपना अभीष्ट वशीभूत हो जाता है।

लेप

श्वेत दूर्वा गृहीत्वा तु कपिला दुग्ध पिष्टताम्।
लेप मात्रे शरीराणां सर्वलोक वंशकरम्॥

(अर्थ) सफेद घास को कपिला गौ के दूध में पीस कर शरीर पर लेप करने से ही सब संसार वशीभूत हो जाता है।

विचित्र तन्त्र

१—मुस्ता मूलं सुवर्णम् वंध्नाति दक्षिणे करे।
कृत्वा तस्य दर्शनाँच्च वशीभूतो नरोनृपाः॥

(अर्थ) नागर मोथा की जड़ सोने के वर्क में लपेट कर दायें हाथ में बांधे। ऐसे पुरुष का दर्शन करने से राजा और मनुष्य सभी वशीभूत हो जाते हैं।

२—रात्रौ स्ववीर्यमादार्थ हस्ते कृत्वा तु यत्नतः।
वामंगलिना च यस्याः स्त्रियांगुष्ठेन्यवेशयेत ॥

(अर्थ) रात्रि के समय अपना वीर्य अपने हाथ में रखे और अपनी बायीं अँगुली स्त्री के अंगूठे से लगा दे तो स्त्री वशीभूत हो जाती है।

३—यदि स्त्री अपनी रज और मुर्गे के पित्ते को लाजवन्ती तथा केसर के साथ पीस कर तिलक करे तो अभीष्ट पुरुष वशीभूत हो जाता है।

यन्त्रावलि

मोहन—यन्त्र

ओ३म्	ओ३म
(नामावश्य)	
वशाकरम्	
ओ३म्	ओ३म्

इस यन्त्र को लिख कर जिसे वश में करना हो उसका नाम भी इसके बीच में लिख देना चाहिये। इसे लिखने के लिये गौरोचन और गंगाजल को मिलाकर स्याही की तरह बना लेना चाहिये। फिर भोज-पत्र पर स्वयं भी सब प्रकार से शुद्ध होकर इसे लिखना चाहिये। फिर इस यन्त्र की विधि-पूर्वक पूजन करे और हवन द्वारा शुद्धि करे। यह क्रिया कर चुकने के पश्चात् अभिमन्त्रित भोज-पत्र को गंगाजल से इस प्रकार धो ले कि

यन्त्र विनष्ट न हो जाय। तत्पश्चात् उस जल को किसी प्रकार भी अपने अभीष्ट को पिलादे और स्वयं उस यन्त्र को किसी ताबीज में रखकर दायें हाथ, कण्ठ या चोटी में बांध ले तो स्त्री या पुरुष अवश्य वशीभूत हो जायगा।

२—महा मोहन-यन्त्र

काम	देव	काम	देव
अ	अमुक	वश	ओं
ओं	अमुक	वश्य कर	ओं
काम	देव	काम	देव

पुष्य नक्षत्र को रविवार के दिन इस यन्त्र को गोरोचन केशर और गंगाजल की मिलावट से स्याही के समान बनाकर छेदहीन भोज-पत्र पर प्रातःकाल ऐसे अवसर से लिखना चाहिये, जब कोई टोक न सके। कलम अनार की बनानी चाहिये। अपनी सब प्रकार से शुद्धि कर लेनी चाहिये। फिर यन्त्र को साये में सुखाकर विधि-पूर्वक हवन-पूजा से सिद्ध कर लेना चाहिये और फिर सोने या तांबे में मढ़वा कर दायें हाथ, चोटी या कण्ठ में धारण करना चाहिये। यन्त्र में अमुक के स्थान पर अपने अभीष्ट का नाम लिखना चाहिये। अवश्य ही वशीकरण होगा। कहा जाता है कि यह यन्त्र बड़ा ही गुप्त तथा सिद्धि दायक है।

गोप्य वशीकरण यन्त्र

अघोर	तत् पुरुष
ओं ईश्वरायनमः	ह्रौं
वासुदेव	सद्याजात

सूचना—

यह यंत्र प्रत्येक मनुष्य के लिये सिद्धि दायक नहीं है। केवल परम विश्वासी, सन्यासी और ब्रह्मचारियों के लिये एक कल्याण का साधन समझ कर श्री शंकर भगवान ने गौरीजी को बतलाया था। अतएव जिन लोगों को आत्मबल और अपने चरित्र का विश्वास न हो, उन्हें इसे सिद्ध करने की चेष्टा न करनी चाहिये ! अन्यथा लाभ के बदले हानि होने की अधिक सम्भावना है।

उपरोक्त यन्त्र को गौरोचन गंगाजल से अनार की कलम के द्वारा भोज-पत्र पर विधि-पूर्वक शुद्धता के साथ

लिखा जाय और वशीकरण के किसी यन्त्र से अभिमन्त्रित करके पूजन तथा हवनादि के द्वारा सिद्ध करना चाहिये। तत्पश्चात् सोने या तांबे के पत्र में मढ़कर दायीं भुजा, चोटी या कण्ठ में धारण करना चाहिये। ऐसे पुरुष को देखकर मनुष्य उसका दास-सा बन जाता है।

४—सिद्ध वशीकरण-यन्त्र

इस यन्त्र को बिना छेद वाले भोज-पत्र पर गंगाजल में गौरोचन और केशर मिलाकर अनार की कलम से लिखे। पर बीच में अपने अभीष्ट का नाम लिखे।

आं	अमुक वश्यं	ङ
क		घ
ख		ख

इस कार्य को कार्तिक की अमावस को अर्ध रात्रि के समय एकान्त स्थान में करना चाहिये। अपनी शुद्धि और यन्त्र का पूजन उपरोक्त यन्त्रों की तरह इसमें भी परमावश्यक है। फिर इसे दायें बाजू, गले या चोटी में बांधने से अभीष्ट वश में हो जायगा।

५—राज वशीकरण-यन्त्र

इस यन्त्र को एकान्त स्थान में शुद्धता पूर्वक बैठकर गौरोचन तथा केशर से भोज पत्र पर लिखे और पूजन हवन के बाद दक्षिण भुजा, कण्ठ या चोटी में धारण कर के राज दरबार में जाय तो राजा वश में हो जायगा।

ह्रीं	क्लीं क्लीं	ह्रीं
व	गं	व
व	अमुक	व
व	गं	व
ह्रीं	क्लीं क्लीं	ह्रीं

५—पति वशीकरण यन्त्र

अमावस की रात बीतने पर उसी के प्रभात काल में (जिस दिन पुष्य नक्षत्र भी हो) केशर और गौरोचन मिलाकर चमेली की कलम से इस यन्त्र को लिखकर अपने पति के किसी ऐसे वस्त्र में बाँध दे, जिसे वह बहुधा अपने साथ रखता हो। यन्त्र भोज-पत्र पर लिखकर हवन पूजनादि करना उपरोक्त मन्त्रों की तरह आवश्यक है। ऐसा करने से पति वश में हो जायगा।

अं	इं	उं	ऋं
कं	खं	गं	घं
चं	छं	जं	झं
टं	ठं	डं	ढं
तं	थं	दं	धं
पं	फं	बं	भं

७--अन्य

यह यन्त्र पुष्य नक्षत्र मंगलवार को किसी वनस्थित एकान्त शिव मन्दिर में सर्व प्रकारेण शुद्ध होकर केशर, गौरोचन में अपनी अनामिका अंगुली का रुधिर मिला कर लिखा जाय फिर भगवान शंकर की यथा विधि पूजा के साथ-साथ इस यन्त्र की पूजा की जाय और बिना किसी के टोके ही कण्ठ या दक्षिण बाहु में स्वर्ण या तांबे के पत्र में मढ़कर धारण करले तो कठोर से कठोर पति भी वशी-भूत हो जायगा।

ह्रीं	ओं	ह्रीं	क्लीं
क्लीं	क्लीं	वश्यं	ह्रीं
ह्रीं	अमुकतां		क्लीं
क्लीं	ह्रीं	क्लीं	ह्रीं

८--स्त्री वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र यथा विधि शुद्ध होकर केशर से फराश की कलम द्वारा भोज पत्र पर एकान्त में लिखे, हवन-पूजनादि के बाद धोकर स्त्री को वह गंगाजल पिला दे तो स्त्री आज्ञानुवर्तिनी हो जायगी।

१	३॥	५
३॥	८	६॥
११	१२	१२॥
१८	१६॥	१५
१६	२।	१२॥

६--अन्य

पुष्य नक्षत्र रविवार को यह यन्त्र पूर्वोक्त प्रकार शुद्धता पूर्वक अपनी छोटी अंगुली के रक्त से भोज पत्र पर लिख कर स्त्री की साड़ी के आँचल से बांध दे तो वह वशीभूत हो जाय। परन्तु तब तक किसी को टोकना न चाहिये।

१०--लोक वशीकरण

इस यन्त्र को भोज-पत्र पर केले के अर्क से चमेली

ओं

ओं (बाएँ) / ओं (दाएँ)

सो	रा	म	हो
हो	कं	लं	को
जं	च	वं	ट
ग	श्री	अ	ठं
श	क्रीं	दी	ढं

ओं

की कलम द्वारा लिखे तथा पूजन हवनादि द्वारा अभि-मन्त्रित करके सोने या तांबे में मढ़वा कर दायें हाथ, गले या चोटी में धारण करे तो लोक वशीभूत हो और सभी लोग प्रेम तथा सम्मान करें।

११--वाणिज्य लाभार्थ यन्त्र

इस यन्त्र को शुद्धता पूर्वक भोज-पत्र पर लिखे और नीचे लिखे हुए मन्त्र का जप करते हुए पूजन करे तथा दक्षिण बाहु या कण्ठ में धारण करके व्यापार के लिये जाय तो जिस व्यापारी से साधक लाभ उठाना चाहता है, वह साधक की इच्छानुसार ही सौदे के दैन-लैन को तैयार हो जायगा।

ओं ओं ओं

ओं कमलां

[illegible] ओं (अभीष्ट का नाम) ओं [illegible]

वश्यं
ओं

ओं ओं ओं

मन्त्र

"ओ३म् कमलाय वशं कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र का जाप एक लक्ष करने से सिद्धि होती है।

१२--अन्य

यह मन्त्र शुद्धता पूर्वक केशर से भोज-पत्र पर लिखना चाहिये फिर गायत्री का एक हजार बार जप करके निम्न-लिखित या किसी ऐसी ही लक्ष्मी देवी के मन्त्र द्वारा इसका विधि पूर्वक पूजन करना चाहिये तथा इसे दाहिने बाजू या गले में धारण करना चाहिये।

लक्ष्मी

४	३	८
९	५	१
२	७	६

लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी

व्यापार में अवश्य लाभ होगा

यह यन्त्र तो यों भी बहुत प्रसिद्ध है। बहुधा व्यापारी या दूसरे लोग भी इसे अपनी बहियों या दीवारों पर लिखते हैं। परन्तु मेरा अनुभव है कि पूर्ण प्रकार से इसकी साधना न होने के कारण इसके द्वारा अभीष्ट लाभ उनको नहीं मिलता। यदि उपरोक्त विधि से वे लोग इसे प्रयोग में लायें तो सफलता कोई सन्देह नहीं

मन्त्र

"ओ३म् कमला व्यापारस्य विघ्न नाशिनी धन ऐश्वर्य दात्री स्वाहा।"

इस्लामी यन्त्रावलि

१--स्त्री वशीकरण

५५१५१७११   ७५६५५८१२१७१

(प्रेमिका का नाम)   प्रेमिका का नाम)

यदि किसी प्रेमिका से किसी कारण वियोग हो जाय तो उपरोक्त मन्त्र को कागज पर लिखे और कागज की बत्ती बना कर उसे जला दे तो प्रेमिका उपस्थित हो जायगी।

२--अन्य

इस यन्त्र को "सूरे यासीन" को इकतालीस बार पढ़ कर कागज पर लिखे। लोबान की धूप देकर दायें बाजू में बांधे तो अभीष्ट स्त्री वशीभूत होकर साधक की इच्छानुसार काम करेगी।

७८६

७	१	१०
१२	८	६
१३	१४	१५

पति-पत्नी वशीकरण

ध्यान रहे कि शास्त्रीय कोई भी यन्त्र तभी सफलता दे सकता है जब कि कोई न कोई वशीकरण मन्त्र भी

सिद्ध कर लिया जाय, जो साधक के अभीष्ट से सम्बन्धित हो। कोरी रेखायें खींचकर किसी यन्त्र को बना लेने से कोई लाभ न होगा। प्रत्येक यन्त्र को उससे सम्बन्धित वशीकरण मन्त्र द्वारा प्रयोगों की भांति सिद्ध कर लेना आवश्यक है। अन्यथा असफलता की दशा में ग्रन्थ और ग्रन्थकार को झूठा कहने के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।

इस्लामी किताबों के अनुसार इस यन्त्र को यदि पति-पत्नी दोनों ही बांधें तो उनमें परस्पर घनिष्ट प्रेम रहेगा इस यन्त्र की इस्लामी पुस्तकों में बड़ी प्रशंसा लिखी गई है।

७८६

८	४	७	१
६	२	७	७
३	६	२	६
३	५	४	८

प्रेमिका-वशीकरण

पीपल के पत्र पर एक तरफ इस यन्त्र को लिखना चाहिये और दूसरी तरफ कुरआन शरीफ के "सूरे कौसर" को और नीचे

१	८	१	१४
३	१३	१२	७
२	३	६	६
१५	५	१०	५

अपने प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिखो फिर इसे कुएं में डाल दे तो भगवदेच्छा से सात दिन के अन्दर ही बिछुड़ा हुआ प्रेम-पात्र आकर साधक से मिल जायगा। हाँ, इन सात दिनों में भी सूरे कौसर का जप करना आवश्यक है।

अन्य

७८६

बालदेन	अल्लाह	कहब	महबून हम
आमले	बालदेन	अल्लाह	कहब
अशादहु बुल्लाह	आमनो	बालदेन	अल्लाह
अल्लाह	अशादहुवा	आमनो	बालदेन

प्रेमी (माशूक) का नाम और पता

इस यन्त्र को लिखकर सूरये यासीन एकसौ एक बार पढ़े फिर तांबे के तावीज में बन्द करके नमाज के बाद दायें हाथ पर बांधले तो माशूक खुद ही हाजिर होकर साधक के हुक्म की तामील करने लगेगा। या—

जुमा व रोजे पीर बाद गुसल पाक साफ होकर लिखे और सूरे यासीन पाँच सौ मरतबा पढ़कर बाद नमाज माशूक को धोकर पिलादे तो वह ता-ब-उम्र गुलाम बनकर रहेगा।

१—प्रेम स्थिर करने का यन्त्र

७८६

खब	सतख	घो	मसस
सखुन	गब	लऽव	मअह
मम लह	मजबन	असो	मलख

प्रेम पात्र का नाम और पता ४११ है

इस यन्त्र को कागज पर लिखे और अपने प्रेम-पात्र (माशूक) के बालों से लपेट कर जला दे। एक सप्ताह तक ऐसा ही करने से प्रेम-पात्र वशीभूत होकर आज्ञा पर चलने लगेगा।

२—अन्य

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर तांबे के तावीज में रखे और अपने प्रेम-पात्र के मकान में गड़वादे, या तावीज का फ़रीता बनाकर

७८६

५	६	१५	१
१६	६	१६	११
८	१२	१८	७

प्रेम-पात्र का नाम और पता

जुमा (शुक्रवार) से एक हफ्ते तक प्रतिदिन एक बार उसे इस प्रकार जलाये कि अपना मुंह प्रेम-पात्र के मकान

की ओर रहे और प्रेम-पात्र का ध्यान सर्वदा रखे तो प्रेम-पात्र साधक का दृढ़ प्रेमी बन जायगा।

३—अन्य

७८६

११ह	११७१ह	१६११
११३१	११	११८
११	५५	७७

प्रेम-पात्र का नाम मय पता

इस यन्त्र को जुमा के दिन केसर या कस्तूरी से कागज पर लिखे और इक्कीस बार सूरये कौसर को जपे, फिर इसे पानी से धोकर प्रेम-पात्र को पिलादे तो वह गुलाम बन जाय।

४—अन्य

७३	७६	२६	१६
२८	१७	४२	२७
२०	३१	२४	२१
२५	२०	१६	२०

प्रेम-पात्र का नाम और पत

इस यन्त्र को कागज पर लिखे और सूरतुल्य इखलास को इक्कीस बार पढ़ता हुआ इसे अभिमन्त्रित करके अनार के पेड़ पर लटका दे तो प्रेम-पात्र साधक से मिलने के लिये बेचैन हो उठेगा। अथवा रात में अकेले जाकर इस यन्त्र को जंगल में गाड़ आवे। या इसके छोटे-छोटे टुकड़े करके आटे में गूंध कर गोलियाँ बनाले और किसी

तालाब या नदी पर जाकर मछलियों को खिलादे, इसी क्रम को सात दिन तक जारी रखे तो कठोर से कठोर प्रेम-पात्र भी आज्ञाकारी बन जायगा।

५—अन्य

इस यन्त्र को कागज पर केशर या कस्तूरी से लिखें और कोरे शकोरे में सरसों के तेल के साथ इसे डाल दे तथा अपने प्रेम-पात्र के मकान की ओर मुंह करके बैठ

७८६

६	८	१	१४
२	१३	१२	७
१६	३	६	८
५	१०	१५	४

प्रेम पात्र का नाम और पता

जाय तथा उसका ध्यान बांधकर यन्त्र को फलीते की तरह जला दे। जल चुकने के बाद पैगम्बर साहब के नाम की कुछ मिठाई बांट दे। प्रेम-पात्र आकर तुम्हारा आज्ञाकारी बन जायगा।

६--अन्य

इस यन्त्र को पीतल के पत्र पर खोदे और जुमा की नमाज पढ़ने के बाद इसे लोबान की धूनी दे। फिर शुद्ध हृदय से अनार के पेड़ पर लटका दे तथा अपने प्रेम-पात्र

७८६

	अल्लाह	इल्लिल्लाह कह्ब	अल्लाह	
बिस्म	इल्लाह	अलबशीर	अल	जलील
	अल्लाह	कह्ब इल्लिल्लाह	अल्लाह	
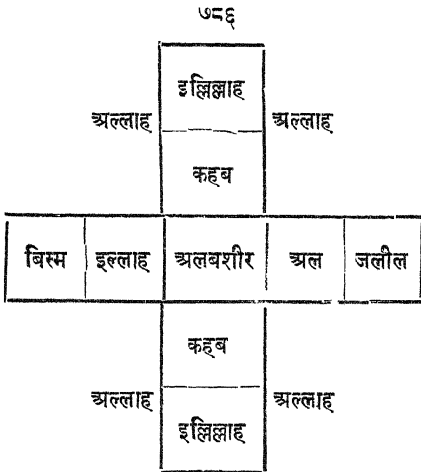
प्रेम पात्र का नाम और पता

का हर समय हृदय में स्मरण करता रहे तो प्रेम-पात्र बेचैन होकर मिलने का प्रयत्न करेगा और यदि उसका वश चलेगा तो निश्चय ही आकर मिलेगा।

वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग

किसी शिकोरे में पानी भर कर ७८६ बार 'बिस्मिल्लाह' का जप करके उस जल को अभिमन्त्रित करके अपने प्रेम-पात्र को पिलादे तो वह दृढ़ प्रेमी बनकर सेवक की तरह आज्ञा मानेगा।

या चने के दानों को सूरते जलजाल से एक से लेकर सौ दाने तक अभिमंत्रित करके आग में डाल दे। प्रेम-पात्र का हर वक्त ध्यान रखे तो वह बेचैन होकर साधक से मिलेगा और उसकी आज्ञा पर चलेगा।

यदि ऐसा करने पर प्रेम-पात्र तीन दिन तक उपस्थित न हो तो इसी प्रयोग को सात दिन तक करना चाहिये।

———

१--शत्रु वशीकरण मन्त्र

❀ शत्रु वशीकरण मन्त्र ❀

७८६

१३७५२६	१३७५३०	१३७५३२	१३७५१६
१३७५३२	१३७५२०	१३७५२५	१३७५३१
१३७५२१	१३७५२१	१३७५२८	१३७५२४
१३७५२५	१३७५२२	१३७५२३	१३७५३४

दुश्मन का नाम

इस यन्त्र को शुद्धता-पूर्वक कागज पर लिखे, फिर सूरे यूनिस से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके गले या बायें बाजू में बांधे तो शत्रु सदैव के लिये वश में हो जायगा।

२—अन्य

जुमा या वीर के दिन किसी दरिया के किनारे एकान्त में बैठकर इस यन्त्र को ११०० बार लिखकर पानी में बहाता जाय तो शत्रु आप ही हार मानने लगे

७८६

६७	७	२	२
७	३	३१	७०
७२	६८	६	१
४	६	७६	७२

शत्रु का नाम और पता

राज-वशीकरण

इस यन्त्र को भोज-पत्र पर केशर से लिखे। लोबान

भीम		१६१६१
१६६२५	अलहम्मद	७८८
भीम		

की धूनी दे और फिर राज-दरबार या कचहरी में जाये तो काम में सफलता होगी ।

१–व्यापारी वशीकरण

जुमा के दिन यह यन्त्र भोज-पत्र पर केशर को नदी के पानी में पीस कर चमेली की कलम से ७०० बार अलग-अलग लिखे और लोबान की धूनी देकर कागजों के छोटे-छोटे टुकड़े करलें तथा आटे के साथ गूंध कर गोलियां बनाले और मछलियों को खिलादे । इनमें से एक कागज साबत बचाकर अपनी दुकान में गाड़ दे तो व्यापार में सफलता होगी । व्यापार के बाधक भी वशीभूत हो जायेंगे ।

७८६

५०	५७	२	७
६	३	५२	५१
५६	५१	८	५१
४	५	५२	५५

यही यन्त्र यदि किसी रूठे हुये मित्र के बालों से लपेट कर जलाया जाय तो मित्र आप ही प्रसन्न होकर साधक से आकर मिल जायगा । यदि यही यन्त्र शत्रु के दरवाजे की चौखट के पास गाड़ दिया जाय तो शत्रु की परेशानियां बढ़ जायेंगी और यदि साथ में

सूरते इखलास का भी अमल किया जाय तो दुश्मन दोस्त बन जायगा ।

२—अन्य

जुमा की नमाज पढ़ने के बाद जो मनुष्य इस यन्त्र को लिखकर अपने दायें हाथ में बांधेगा उसे व्यापार में लाभ होगा ।

बिस्म	इल्लाह	अर्रहमान	अर्रहीम
अर्रहीम	अर्रहमान	इल्लाह	बिस्म
अल्लाह	बिस्म	अर्रहीम	अर्रहमान
अर्रहमान	अर्रहीम	बिस्म	अल्लाह

सर्व वशीकरण

यह यन्त्र वास्तव में १५ वाला है, जिसे आप पीछे देख चुके हैं। उसी के साथ यह चौकोर यन्त्र और जोड़ दिया गया है। हिन्दू तान्त्रिकों के मतानुसार और इसका प्रचार देखते हुए यह जान पड़ता है कि उपर्युक्त यन्त्र सचमुच ही अत्यन्त प्रभावशाली होना चाहिये ।
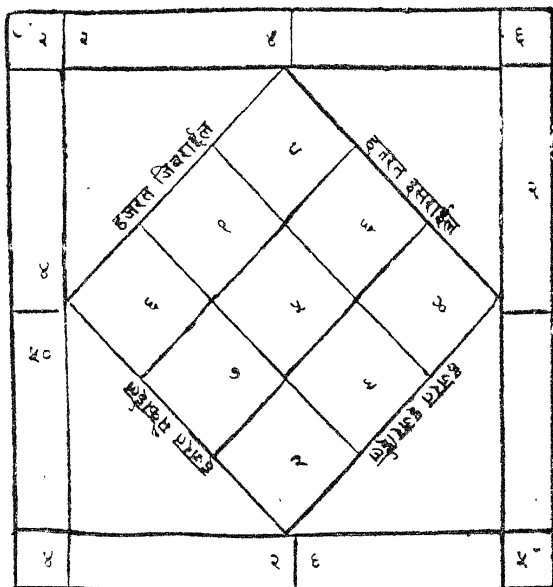
इस यन्त्र को लिखकर सूरये जमर से १०० बार अभिमन्त्रित करे और फिर लोबान की धूनी देता हुआ अपने अभीष्ट का ध्यान रखे। फिर इसे तांबे के ताबीज में बन्द करके दायें हाथ में धारण करे तो कष्ट निवारण हो जायगा। लोग सम्मान करेंगे। साधक की आज्ञा मानेंगे। दरबार में सब इज्जत करेंगे। रोग दूर होगा। व्यापार में लाभ होगा। धन-सन्तान की वृद्धि और सुख प्राप्त होगा।

अपना मत

तान्त्रिक शास्त्रों के देखने और उनके आचार्यों के मत पढ़ने से यह समझ में आता है कि यह दैवी विद्या मनुष्य को प्राप्त तो हो सकती है, परन्तु यदि मनुष्य इससे कोई अनुचित लाभ उठाना चाहे—(जैसे किसी स्त्री को वश में करके उसके सतीत्व को नष्ट करना, या किसी शत्रु को वश में करके उसे मारने या नीचा दिखाने की चेष्टा करना आदि···) तो उसे विश्वास रखना चाहिये कि पहले तो मन्त्र ही सिद्ध न होगा और यदि हो भी गया तथा साधक का अभीष्ट उसके हाथ में आ गया और उसने वशीभूत से कोई अनुचित कृत्य किया तो अर्थ का अनर्थ हो जायगा। साधक की न केवल यही साधना भ्रष्ट हो जायगी वरन् उसके वे अन्य सुकर्म भी मिट्टी में मिल जायेंगे जिनके प्रभाव से वह फल फूल रहा था। संक्षेप में तात्पर्य यह है कि ऐसा कर्म-भ्रष्ट, दुराचारी लोक-परलोक दोनों से जायगा।

मुझे तन्त्र-मन्त्र आदि के विषय में अधिक अनुभव नहीं और न मैं यही जानता हूं कि पुस्तक में लिखे गये सभी मन्त्र सच्चे हैं या झूठे, फिर भी मैंने इस

विषय में जहां तक अपनी आंख से देखा है उसके चन्द उदाहरण देकर पाठकों से यही अनुरोध करूंगा कि वह इस विद्या में यदि अधिकार करना चाहें तो त्याग भाव और लोकोपकार की दृष्टि से ही करें। स्वार्थ या लोलुपता में पड़ कर नहीं। अन्यथा धोखा होगा और अन्त तक पछताना होगा। मैं नीचे जो उदाहरण देता हूं उनमें केवल नाम परिवर्तन इसलिये कर दिये हैं कि किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप न हो। परन्तु मैं ईश्वर की साक्षी देकर लिख रहा हूँ कि घटनायें अक्षरशः सत्य हैं।

१—सन् १९०७ या ०८ में मेरी आयु भी लगभग इतनी ही थी। मेरे गाँव में बैजू कुरमी प्रसिद्ध तथा कुशल तान्त्रिक था। उसके कई शिष्य भी थे और प्रतियोगी भी।

एक दिन मैं बैजू के मकान के सामने दो चार अपने साथी बालकों के साथ खेल रहा था। लगभग ८-९ का समय होगा और जाड़े के दिन। एक 'सपेरा' मोहन बाजा बजाता हुआ वहां से निकला। बैजू ने उसे अपने दरवाजे पर बुला लिया हम लोग भी खेल छोड़ कर साँप देखने की लालसा में बैजू के एक चबूतरे पर जा बैठे। सपेरे ने अपना झोली-झंगड़ रखकर बाजा बजाना

शुरू किया और साँप की टोकरी खोलदी। सांप काला था और वह बाजे पर फन फुला-फुला कर टक्कर मारने लगा। पड़ौस के दस-बीस स्त्री पुरुष बालक भी आकर तमाशा देखने लगे।

लगभग पांच मिनट के बाद सपेरे ने अपना वह खेल बन्द कर दिया और शायद उसे दो-ढाई आने की आमदनी भी हो गई। फिर सपेरा तम्बाकू पीने लगा और बैजू ने उससे पूछना आरम्भ किया—

—"कुछ जन्त्र-मन्त्र भी जानते हो! नाथ!"

—"हां क्यों नहीं। बाद खेलोगे? लो, आओ, दो-दो चोटें हो जायें।" (बुन्देल खण्ड में सपेरे को "नाथ" और तान्त्रिक द्वन्द्व युद्ध को "बाद" कहते हैं।)

—"खैर, बाद का तो वक्त नहीं है। आओ, एक ही बात में तुम्हारी विद्या की जांच करलें। लाओ, अपना कड़ा।"

सपेरे ने अपना कड़ा उतार कर बैजू को दे दिया। और बैजू ने उसे सामने की बावली में फेंकते हुए कहा—"लो नाथ! अपने कड़े को बुलालो।"

नाथ ने उड़द के दाने मंगवाये और न जाने क्या २ तन्त्र टोटके किये। सुबह से शाम होने लगी मगर

कड़ा न निकल सका। भूखा-प्यासा सपेरा झक मार कर बैठ रहा, हजारों दर्शकों की भीड़ थी तब अन्त में बैजू ने ही मुस्कराते हुए कहा—'कहो नाथ! और भी कोई करामात बाकी है? या मैं अपना मन्त्र चलाऊं?"

सपेरा नीचा सिर किये हुए ही बोला—"मैं आपका शागिर्द होने को तैयार हूँ अगर आप मेरे कड़े को कुयें से बुलालें।"

बैजू ने एक लोहे की चूड़ी कुछ पढ़कर बावली में फेंक दी और तब सब दर्शकों के देखते-देखते वह चूड़ी और कड़ा एक दूसरे के साथ उलझे हुए बावली से निकल बैजू की गोद में आ पड़े।

यह थी बैजू की मन्त्र-शक्ति, तान्त्रिक करामात। जिसके बल पर कहा जाता था कि उसने जवानी में कितनी ही कुलवन्ती स्त्रियों को वशीभूत करके उनका सतीत्व नष्ट किया। कितने ही लोगों के धन का अपहरण कर लिया। दो-चार मारण-प्रयोग भी किये।

यद्यपि यह बात मैं उस समय न जानता था, परन्तु कुछ बड़े होने पर ज्ञात हुआ कि प्रायः सारा गांव उससे रुष्ट और परेशान है। किसी-किसी ने उसे कानूनी शिकंजे में भी जकड़ना चाहा, परन्तु वह साफ बचता रहा।

अपने तान्त्रिक बल से या बातों की सफाई से यह मुझे न तब मालूम था और न आज।

परन्तु शायद ईश्वर ने उसे दण्ड देने का निश्चय कर लिया और सेर को सवासेर से भेंट हो ही गई। दूसरी घटना सन् १६ की है—

पं० केवल व्यास दुर्गा का इष्ट करते थे और इतना प्रमाणिक कि उन्होंने तालाब में से तीतर, गोश्त में से गुलाब के फूल तथा शराब में से दूध का आभास करा के तात्कालीन महाराज मर्दनसिंह जी नानपुर नरेश से कुछ ग्राम मुआफी में प्राप्त कर लिये थे।

तालवेहट में चैत्र की दुर्गा नवमी बड़े ही समारोह से मनाई जाती थी और उस समय कोई एक ब्राह्मण का बालक धोखा देकर दुर्गा के स्वरूप में सजाया जाता था। उक्त दुर्गा-वेष-धारी बालक का एक ही मार्ग निश्चित था। जिससे चलकर उसे शृंगार-गृह से उत्सव स्थल तक आना पड़ता था। वह केवल मन्त्रों के बल से ही वहां तक आ सकता था। रात में उत्सव होता और सवेरा होते-होते वह बालक मर जाता था! देवी शक्ति के कारण, या लोगों की धूर्तता से यह में नहीं कह सकता।

मेरे बालिग होने तक ऐसे दुर्गा-उत्सव पर गवर्मेंट की ओर से प्रतिबन्ध लग चुका था और मैंने अपने होश में ऐसी कोई घटना नहीं देखी, हाँ साधारण से खेल-तमाशे हुआ करते थे और उनमें से कुछ अब तक होते जाते हैं।

जो हो, पं० केवल अपने पुत्र हरिराम को अपनी कुछ विद्या सिखा कर सन् १६१३ में मर चुके थे और पं० हरिराम को अपनी उतनी ही विद्या पर गर्व था, या संतोष। सन् १६१६ में दुर्गानवमी के दिन जब बैजू के जवाहरे निकले, तो हरिराम ने कोई ऐसा प्रयोग किया कि जवाहरों की टोकरियां स्त्रियों के सिरों से दो-दो हाथ के लगभग ऊपर उठ गयीं। स्त्रियां आगे बढ़ती गयीं, परंतु वे टोकरियां वहाँ ही आसमान और जमीन के बीच में बिना आधार स्थिर रह गयीं।

यह दशा देखकर बैजू ने अपने प्रयोग आरम्भ किये परन्तु कोई परिणाम न निकलने पर उसे अपने शिष्यों तथा दर्शकों के सामने नीचा देखना पड़ा। पं० हरिराम ने जवाहरों को यथापूर्व कर दिया। पर एक बड़े यान्त्रिक से बैर मोल ले लिया और कहना न होगा कि उसके फलस्वरूप ही उन्हें अपने बेटे की बलि देनी पड़ी।

इतनी बड़ी हानि के पश्चात् पं० हरिराम को बदला चुकाने के लिए तैयार हो जाना स्वाभाविक बात थी और उन्होंने गुप-चुप सारी तैयारी भी कर ली, परंतु दैवात् स्वामी प्रकाशानन्द जी आ पहुँचे और उन्होंने पं० हरिराम को ऐसा कुकृत्य करने से रोका। पं० हरिराम को उनकी बात ऐसे ही माननी पड़ी, जैसी बैजू बावरे को अपने गुरु से सिद्ध सँगीत कला सीख कर उन्हें बचन देना पड़ा था कि मैं इस विद्या के द्वारा किसी को हानि न पहुँचाऊंगा। अन्त में पं० हरिराम बोले—"परंतु स्वामी जी मैं इस अनुष्ठान का अधिकांश भाग पूर्ण कर चुका हूँ। आपही बतलाईये कि अब इसकी पूर्ति किस प्रकार की जाय ?"

स्वामी जी के अनुरोध से पं० हरिराम ने एक भैंसा प्रकट किया और उसका पूजन करके दुर्गाष्टमी की रात को सैकड़ों दर्शकों के सामने बैजू के मकान में बोये हुए जवाहरे चरवा लिये। इसके बाद बैजू को शायद दुःख, पछतावा या किसी कारण से रोगी होकर शैय्या पकड़ लेनी पड़ी।

बैजू का अन्त समय लेखक ने अपनी आंख से देखा है। भगवान ! ऐसी नारकीय मृत्यु किसी को न दे। मैंने देखा है-उन दिनों बैजू के अंग-प्रत्यँग में कीड़े बिलबि-

लाते थे। दुर्गंध के मारे उसके लड़के भी उसके पास न जाना चाहते थे। वह दिन रात चिल्लाता था— "ओ बेटा! बचा लो! यह देखो, योगनी मेरे मुँह पर अष्टा रख रही है। (लोग कहते हैं कि सचमुच ही बैजू के मुंह पर अष्टा दिखाई देती थी) हाय! हाय ओ··· मैंने तेरा सुहाग छीन लिया था, तू कुएं में गिर पड़ी थी। ओ······मैंने तेरे घर वाले से तुझे छीन कर अपनी दुरिच्छा की तृप्ति की थी। आज मुझे तू खाने दौड़ रही है, हा हा! क्षमा···आदि। ऐसी दशा उसकी लगभग तीन महीने रही और बड़े ही कष्टों के बाद उसका प्राणांत हो सका।

२—एक ईसाई डाक्टर थे—मिस्टर मैथ्यूज। वह स्वयं तांत्रिक, मांत्रिक कुछ न थे। एक तँत्र वेत्ता बीमार होकर उनके अस्पताल में आया और अच्छा भी होगया। डाक्टर ने उसके हुनर का हाल सुन कर उससे कोई हुक्मी चीज बतौर निशानी मांगी। तांत्रिक उन्हें वशीकरण का जल देकर चला गया और डाक्टर साहब लगे उसके द्वारा पर स्त्रियों से अपनी काम-लिप्सा पूर्ण करने। अस्पताल की समस्त नववयस्क नर्सों को वशीभूत करने के बाद उन्होंने गिरजा घर पर हाथ मारा और कुछ जातीय स्त्रियों को भी ईसाई बना डाला।

लगभग आठ वर्ष बाद वही तांत्रिक फिर आया। उसने पहले तो एकांत में डाक्टर साहब से शेष का जल वापिस मांगा। परंतु डाक्टर के इनकार करने पर हजारों आदमियों की भीड़ में डाक्टर के कारनामे बयान किये। कारनामे ही नहीं, हर औरत का नाम और पूरा पता मय तारीख व वक्त के कह सुनाया। ईश्वर जाने, उसने किस आकर्षण से काम लिया कि उनमें से जो-जो स्त्रियाँ उस समय शहर में थीं, वह स्वयं आकर अपनी करनी पर पश्चा-ताप प्रकट करने लगीं। किसी किसी का कहना था कि हमें समझ में ही न आता था कि हम डाक्टर की ओर क्यों खिंची जा रही हैं! हमारा वह नशा तभी दूर हुआ, जब हम डाक्टर से मिल चुकी। हमें बाद में बड़ी शरम और पछतावा हुआ। पर करती क्या!

इस नाटक के दूसरे दिन ही डाक्टर शहर छोड़ कर चले गये। तांत्रिक को उसकी डिब्बी भी मिल गयी। परंतु तांत्रिक ने सबके देखते देखते अपना दायाँ हाथ काट कर अपनी भूल का प्रायश्चित किया। डाक्टर साहब का भविष्य उनकी छोटी लड़की के जबानी मालूम हुआ।

वे अन्धे हुए, कोढ़ी हुए, और अन्त में आत्मघात करके दुनियाँ से छूटे।

उपरोक्त घटनायें लेखक की देखी हैं। जिनसे मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूं कि तन्त्र-मन्त्र का प्रयोग यदि स्वार्थ वश किया जायगा तो निश्चय हानि होगी।

अब प्रश्न उठता है कि यदि तन्त्र-मन्त्र स्वार्थ के लिये नहीं तो इनसे परमार्थ या परोपकार कैसे हो सकता है। इसका उत्तर संक्षेप में यह मान लीजिये कि अपनी ही धर्मपत्नी स्वभाव की तेज है, या आपकी किसी निर्बलता के कारण वह आपका अपमान सा करने लगी है है तो सबसे पहले आवश्यकता है···अपनी उस निर्बलता को दूर करने की। फिर मान लीजिये कि उसका और आपका स्वभाव नहीं मिलता और आप यह जानते हैं कि मैं सत्य मार्ग पर हूं। तब किसी तन्त्र प्रयोग द्वारा उसे वशीभूत करके अपनी ही तरह सन्मार्ग पर चलाइये।

प्रश्न—पर-स्त्री को वश में करने की आवश्यकता क्या है?

उत्तर···यदि आप यह जानते हैं कि उसके दूषित भाव या कर्मों के कारण आपके किसी मित्र या समाज

को कष्ट पहुंच रहा है, तो उसे वश में करके दूसरों की रक्षा करना आवश्यक है। ऐसे ही मरण-प्रयोग (यद्यपि सबसे निकृष्ट है, फिर भी) किसी जाति समाज का राष्ट्र के शत्रु पर (जब कि वह किसी अन्य उपाय से दमन न किया जा सके) चलाना आवश्यक है। व्यापारिक प्रयोगों से अनुचित लाभ उठाना उद्देश्य न होना चाहिये और ऐसे ही राज वशीकरण का उद्देश्य हो—राजा को वश में करके प्रजा-वत्सल बनाना।

मैंने एक पुलिस कर्मचारी को देखा है, जिसके पीछे बालक बालिकाओं की भीड़ लगी रहती थी। वह राह चलते हाथ ऊंचा करते ही मिठाई या नारियल आदि मंगा लेता था और उन सब में बांट देता था। पर स्वयं उसका एक अंश भी ग्रहण न करता था। परोपकार की दृष्टि से यह विद्या कितनी उत्तम है?

एक प्रोफेसर साहब किसी भी सांप के काटे हुए का जब तार पाते थे, तो अपने पास बैठे हुए किसी भी मनुष्य को एक तमाचा मार कर बेहोश कर लिया करते थे। उधर रोगी चाहे हजारों मील दूर क्यों न हो होश में आ जाता था और इधर प्रोफेसर साहब अपने साथी पर मन्त्रों का प्रयोग करके उसे अच्छा कर लेते थे। शायद वह महो:

दय अभी संसार में हैं। भला उनसे क्या कम उपकार होता है?

भूत प्रेत को दुनिया न माने परन्तु मैं मानता हूँ और मानता रहूँगा। क्योंकि उसके सम्बन्ध में मेरी आप बीती घटनायें हैं, यद्यपि मैं चेलैंज देकर किसी को उसे दिखा नहीं सकता क्योंकि इस राग में कभी पड़ा नहीं हूँ। तथापि तर्क-वितर्क से उसका अस्तित्व सिद्ध कर सकता हूँ।

चूंकि यह इस पुस्तक का विषय नहीं है, इसलिये इसे न बढ़ाकर यही कहना पर्याप्त है कि जो लोग भूत-प्रेत आदि की बाधाओं से मनुष्य को मुक्त करते हैं, वह भी उपकारी हैं, यदि उन्हें किसी प्रकार का अर्थ-लाभ न हो तो।

वशीकरण का प्रत्यक्ष प्रमाण

सन् २५ में मेरा हृदय भगवद्भक्ति की ओर जैसा आकृष्ट था, वैसा न पहले कभी हुआ था और न फिर आज तक हुआ मेरी उन दिनों हार्दिक इच्छा थी कि किसी प्रकार तालाब के महावीर जी वाले मंदिर का जर्णोद्धार हो जाय। पर—"जर नदारद, इश्क टें टें।"

सोचा यदि किसी धनी-मानी पुरुष का सहयोग प्राप्त

हो जाय तो यह कार्य सहज ही हो सकेगा। पर—था परदेश। श्री मूलराज जी अवश्य पड़ौसी थे, मगर उनसे कभी दुआ-सलाम भी न हुई थी। इस उधेड़-बुन में, मैं ईदगाह (आगरा) की ओर चला गया, एक नल के पास दर्शन हुए उन महात्माजी के, जिन्हें वहां के लोग 'अलख बाबा' कहा कहते थे। अभिवादन आदि के बाद प्रसंग छिड़ बैठा। बाबा जी बोले···तुम्हें रामायण पर तो विश्वास है न! मैंने कहा···'हां, । तब उन्होंने कहा :—

'उमा दारु जोषित की नाईं ।
सबै नचावत राम गुसाईं ॥

इस चौपाई का सवा लक्ष जप करो। कार्य में सफलता होगी। मैंने ऐसा ही किया और मुझे नहीं मालूम कि क्यों अचानक ही मूलराज जी ने मुझे बुला भेजा तथा मंदिर के जीर्णोद्धार का वचन दे दिया। इतना अवश्य पता है कि उनका लड़का बीमार था और वह उसे नीरोग करने के लिये ही ऐसा करने को बाध्य हुए थे। लड़का अच्छा हो गया और मंदिर का जीर्णोद्धार भी।

स्लामी तन्त्र-मन्त्र और हिन्दू

स्लामी तन्त्रों का अधिकतर कुरआन शरीफ की आयतें या सीयारे आदि का पाठ भी करना पड़ता है। मैंने विचार किया था कि "सूरे युनिस, सूरे यासीन, सूरे कौसर, सूरतुल इखलास, सूरते जलजाल और सूरये जुमर" की पूरी-पूरी तशरीह कर दूं। पर अव्वल तो साम्प्रदायिक द्वेश के कारण कोई हाफिज या मुल्ला उन्हें बतलाने को तैयार ही न हुआ। किस्मत से एक हाफिज साहब मिले भी तो वह इतनी लम्बी चीज समझ में आयी कि एक छोटी सी पुस्तक ही अलग से लिखी जा सकती है। दूसरे इन तन्त्रों में नमाज की पाबंदी है। इसलिये मैंने इस विषय को अधिक नहीं बढ़ाया तात्पर्य यह है कि यह प्रयोग विशेषकर मुसलमानों के लिए ही है।

परन्तु यदि कोई हिन्दू भाई भी इनसे फायदा उठाना चाहे तो उसे किसी योग्य मौलवी से कुरआन को बिलकुल शुद्ध पढ़ना चाहिये। नमाज की जगह वह ईश्वर या अपने किसी भी इष्टदेव का ध्यान कर सकता है। साधक को सदैव विश्वास रखना चाहिये कि राम और रहीम एक ही ईश्वर के नाम हैं। फिर भी मेरा इतना मत है कि

हिन्दू को जितनी सुविधा हिन्दी सम्बन्धी प्रयोगों में पड़ेगी, उतनी अरबीसे सम्बन्धित स्लामी तन्त्रादि में नहीं।

विविध तन्त्र-मन्त्र

साधक को यह भी जान लेना आवश्यक है कि वशीकरण प्रयोग एक बारगी अपना प्रभाव उतनी जल्दी नहीं दिखा सकता, जितना जल्दी दूसरे प्रयोगों के साथ उसका प्रभाव पड़ता है। प्रयोग क्रमानुसार किये जाने चाहिये। अर्थात्-पहले यह देखना चाहिये कि तुम्हारे अभिष्ट का प्रेम किससे है? उसके प्रेम को भंग करने के लिये विद्वेषण प्रयोग करना होगा तब उन दोनों का मन मुटाव हो सकेगा। इस प्रयोग के बाद उच्चाटन प्रयोग करना पड़ेगा, जिससे तुम्हारे अभीष्ट का चित्त अनस्थिर हो जाय और उसका मन किसी भी काम में न लगे! तत्पश्चात् मोहन या आकर्षण प्रयोग केद्वारा उसे अपनो ओर प्रभावित कर लीजिये, फिर वशीकरण प्रयोग द्वारा अपने वश में कर लीजिये। वशीभूत होने के बाद स्तंभन प्रयोग से उसके चित्त को स्थिर करके शान्ति प्रयोग कीजिये, जिससे आप व उसे दोनों को शान्ति प्राप्त हो सके। मारण प्रयोग सबसे बीभत्स और पापमय है, उसे

काम में लाना साधु साधक को उचित नहीं फिर भी यदि किसी को आवश्यकता जान पड़े तो विद्वेषण, उच्चाटन, मोहन, वशीकरण और फिर मारण का प्रयोग करे। परन्तु मेरी समझ में जो वशीभूत हो जायगा। उसपर मारण की आवश्यकता ही न होगी।

"जो गुड़ दीन्हें ते मरे, माहुर देहु न ताहि।

आगे क्रमशः उपरोक्त प्रयोग लिखे जाते हैं।

१—विद्वेषण

"ओ३म् नमो नारायण अमुकं अमुकेन सह विद्वेष कुरु-कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र में जहाँ "अमुक व अमुकेन" शब्द आये हैं, वहां उन दोनोंके नाम लेना चाहिये, जिनमें मनमुटाव कराना अभीष्ट हो और सवा लाख बार जप करना चाहिये, तो उन दोनों में फूट हो जायगी।

२—उच्चाटन

(अ) 'ओ३म् नमो भगवते रुद्राय द्रष्ट करालाय अमुकं पुत्र बान्धवैं सह हन-हन दह-दह पच-पच शीघ्र मोच्चाटयो च्चटयहुँ फट् स्वाहा ठः ठः"

"ओ३म् नमो भीमस्याय अमुक गृहे उच्चाटन कुरु कुरु स्वाहा।"

उपरोक्त दोनों मन्त्रों में भी अमुक के स्थान पर अभीष्ट का नाम लेना चाहिये। दोनों मन्त्रों को विधिपूर्वक एक एक लाख बार जपना चाहिये।

३— स्तम्भन

शास्त्र—स्तम्भन—मन्त्र

"ओ३म् अहो कुम्भ महा राक्षस नैकषा गर्भ संभूत पर सैन्य स्तम्भन महा भगवान् रुद्र आज्ञापयति स्वाहा।"

इस मंत्र का सवा लाख बार जपने से सिद्धि प्राप्ति होती है।

या

"ओ३म् नमो अघोर रूपाय शास्त्र स्तम्भन कुरु-कुरु स्वाहा।"

यह मंत्र सवा लाख बार जपने से सिद्ध होता है।

अग्नि-स्तम्भन-मन्त्र

"ओ३म् नमो अग्नि रुपाय मम शरीरे स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।"

यह मन्त्र भी सवा लाख बार जपने पर सिद्ध होता है।

जल-स्तम्भन-मन्त्र

"ओ३म् नमो भगवते रुद्राय जलं स्तंभय ठः ठः ठः ।"

यह मन्त्र भी सवा लाख बार जपने से सिद्ध होता है ।

अग्नि और जल-स्तम्भन

"ओ३म् नमो भगवते जलं अग्निश्च स्तंभय स्तंभय हुँ फट् स्वाहा ।"

यह मन्त्र भी सवा लाख बार जपने से सिद्ध होता है ।

मारण मन्त्र

"ओ३म् नमः काल संहाराय अमुकं हन हन क्रीं हुँ फट भस्मी कुरु स्वाहा ।"

यह मंत्र भी सवा लाख बार जपने से सिद्ध हो जाता है । परन्तु जैसा कि ऊपर निवेदन किया जा चुका है । इस प्रयोग को तब तक भूल कर काम में न लाना चाहिये, जब तक आत्मा सब प्रकार से सोच-विचार करके यह निर्णय कर दे कि दर असल अमुक मनुष्य मारने ही योग्य है । उसके जीवित रहने से देश, धर्म, समाज या

अपने जीवन पर अन्याय पूर्ण आघात होने की आशंका है।

फिर जब इस प्रयोग पर कटिबद्ध होना ही पड़े तो अत्यन्त योग्य और परिचित अनुभवी तांत्रिक की देख-रेख में सतर्कता-पूर्वक सारा अनुष्ठान पूर्ण करे, अन्यथा विश्वास रहे कि यह प्रयोग उलटा प्रभाव भी दिखला सकता है।

मारण सम्बन्धी अन्य मन्त्र

१—"ओं चाण्डालिनि कामाख्या वासिनी नव दुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा।"

यह मंत्र विधि-पूर्वक एक लाख बार जपने से सिद्धि होती है।

२—"ओं शुरे शुरे स्वाहा।"

३—"ओं शुखले स्वाहा।"

४—ओं द्रुं अमुकस्य (नाम) मारण कुरु कुरु स्वाहा।"

५—"ओं द्रुं अमुकं (नाम) मारण कुरु कुरु स्वाहा।"

उपरोक्त तीनों मंत्र विधि-पूर्वक सवा लाख बार जपने से सिद्धि होती है।

शांति-मन्त्र

ओं शांते शांते सर्वारिष्ट नाशिनी स्वाहा।"

इस मन्त्र को विधि-पूर्वक हवन, पूजनादि के पश्चात् सवालाख बार जपने से सिद्धि मिलती है और हृदय को शान्ति प्राप्त होती है।

यक्षिणी-वशीकरण

यक्षिणी शक्ति के कई नाम हैं और प्रत्येक नाम वाली शक्ति अपना अलग ही प्रभाव रखती है।

यक्षिणी नाम की किसी भी शक्ति की साधना करना, मानो कृपाण की धार पर चढ़ना है। जरा चूक हुई कि अपना विनाश हो गया। इसलिये इस साधना को बहुत तैयारी और दृढ़-प्रतिज्ञ होकर करना चाहिये. इस साधना में ऐसे वैसे का काम नहीं। आवश्यकता है...सच्चे संयमी, जितेन्द्रिय, योगी, सन्यासी की!

अब यक्षिणी की शक्तियों का अलग-अलग उल्लेख किया जाता है।

जया यक्षिणी वशीकरण

"ओं ह्रीं ह्रीं जायें नमो नमः हुँ फट्।"

किसी भी महीने की अमावस्या से लेकर दूसरे महीने की अमावस्या तक निर्विघ्न एकान्त स्थान पर निरंतर प्रतिदिन इस मँत्र का पांच हजार बार जप करना चाहिये। जप से पूर्व दुर्गा-पूजन सम्बन्धी समस्त सामग्री, जैसे⋯नारियल, सिन्दूर, गुग्गुल, कुछ मिष्टान के द्वारा पूजन तथा हवन करना आवश्यक है। एक साधक ने बतलाया है कि पूजन के लिये मांस-मदिरा भी ले जाना चाहिये। परंतु दूसरे साधक ने इसका होना आवश्यक नहीं बतलाया। हां, साधन के दिनों में ब्रह्मचर्य, भूमि-शयन, एकाहार, सत्य भाषण आवश्यक कहा है।

जया यक्षिणी सिद्ध हो जाने पर वह साधक के प्रत्येक कार्य में सहायता पहुँचाती है। प्रत्यक्ष आकर उनसे बातचीत करती है और विशेषकर विजय दिलाती है।

इसका दूसरा मँत्र यह है, जिसकी कोई अवधि नहीं। अर्कमूल वृक्ष के नीचे प्रति दिन एकांत में दस हजार बार जप करना चाहिये। उसी विधि से जैसी

ऊपर बतला चुके हैं। जिस दिन यक्षिणी दर्शन दे दे, समझ लेना चाहिये कि हमारा अनुष्ठान सफल हो गया।

मन्त्र

"ओं ऐं जया यक्षिण्यै सर्व कार्य साधनं कुरु कुरु स्वाहा।"

विजया—वशीकरण

"ओं हिलि कुटि कुटि तुह तुह मे वश मानय अः अः स्वाहा।"

किसी एकान्त श्मशान भूमि में वृक्ष पर बैठ कर लगातार एक मास तक उपरोक्त मन्त्र जपने से विजया यक्षिणी वशीभूत होकर प्रत्यक्ष दर्शन देती है और साधक की आज्ञानुवर्तिनी बन जाती है।

महा लक्ष्मी वशीकरण

"ओं ह्रीं क्लीं महा लक्ष्मै नमः"

यह मन्त्र वट वृक्ष पर बैठ कर प्रति दिन दस हजार बार जपने से एक मास में सिद्ध होता है। धन-प्राप्ति के लिये साधक बहुधा इसी को सिद्ध करते हैं। इस प्रयोग की पूजन-सामग्री में कोई भी तामसी पदार्थ न ले जाना चाहिये।

पद्मनी वशीकरण

"ओं ह्रीं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा ।"

एक शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र पर पद्मनी का कल्पित चित्र बनाकर उसकी विधि पूर्वक पूजा करनी चाहिये। फिर उपरोक्त मन्त्र को तीन हजार बार जपना चाहिये। ऐसा प्रतिदिन सुबह-शाम करते हुए एक मास में पद्मनी वशीभूत हो जाती है।

१....रति-प्रिया वशीकरण

"ओं दु रति प्रिय साधय साधय जल जल धीर धीर आज्ञा पय स्वाहा ।"

इस मन्त्र को जल में खड़े होकर प्रति रात्रि को एक हजार बार जपने से छः महीने में सिद्धि प्राप्त होती है। जल नाभि तक रहना चाहिये।

२....दूसरा मंत्र

"ओं आगच्छ रति प्रिये स्वाहा ।"

एक स्वच्छ और शुद्ध वस्त्र पर रति प्रिया का काल्पनिक चित्र बना कर उसकी विधि-पूर्वक पूजा करनी चाहिये। फिर एक मास तक प्रत्येक रात्रि में उपरोक्त मन्त्र को एकान्त स्थान में पांच हजार बार जपना चाहिये।

रति प्रिया वश में होकर साधक की इच्छानुसार वर देगी ।

अनुरागिणी वशीकरण

"ओं ह्रीं अनुरागिणी स्वाहा ।"

वस्त्र पर अनुरागिणी का काल्पनिक चित्र बना कर पूजन के पश्चात् प्रतिदिन सुबह-शाम इस मन्त्र का तीन हजार बार जप करते रहने से अनुरागिणी प्रकट होकर वर देती है।

आद्या विभूषिणा वशीकरण

"ओं ह्रीं ह्रीं फट् फट् विभूषिणी हुँ हुं हुँ"

इस मन्त्र को कनैर के वृक्ष के नीचे प्रतिदिन आठ हजार बार जपने से आद्या विभूषिणी वशीभूत हो जाती है ।

नटी वशीकरण

१—"ओं ह्रीं आयुच्छ अटी स्वाहा।"

२—"ओं ह्रीं हवी फट् नटी हुँ हुं फट् ।"

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक का जप करना चाहिये और जप से पूर्व वही सब क्रिया आवश्यक हैं।

जो पद्मिनी के लिये लिखी गयी है। जप-संख्या और समय भी उतना ही समझना चाहिये।

परा कुन्डलिनी वशीकरण

"ओ३म् ह्रीं ह्रीं फट् फट् परा कुन्डलिनी हुं हुँ हुं"

श्मशान भूमि में रात के समय प्रति दिन दस हजार बार उपरोक्त मन्त्र का विधि-पूर्वक जप करने से परा कुन्ड-लिनी वशीभूत हो जाती है।

हंसिनी-वशीकरण मन्त्र

"ओं हूँ हूँ हूँ फट् हंसिनी।"

किसी स्वच्छ और शुद्ध वस्त्र पर हंसिनी का चित्र बना कर उसकी विधि-पूर्वक पूजा की जाय और फिर प्रति दिन पांच हजार बार उपर्युक्त मन्त्र का जप किया जाय तो हंसिनी प्रसन्न होकर प्रकट हो जाती है।

सिंहनी वशीकरण

"ओं ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंहनी हूं हूँ हूं फट्"

निर्जन वन में बने हुए किसी शिवालय में बैठ कर शिवजी का पूजन करके उपरोक्त मन्त्र को प्रति दिन दस हजार बार जपने से एक मास में सिंहनी वश में हो जाती है।

सुरंगिणी वशीकरण मन्त्र

"ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुँ हुँ हुँ शीघ्र सिद्ध प्रयच्छ सुर सुरंगिणी महा माये साधक प्रिय ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

उपरोक्त मन्त्र को एकान्त स्थान में रात्रि के समय शैया पर बैठ कर प्रति दिन एक हजार बार जपने से छः वर्ष में सिद्धि प्राप्त होती है। उपरोक्त मन्त्र की साधना आसान है तो समय अधिक लगता है।

स्वर्णमाला वशीकरण

"ओं जय जय सर्व देवा सुर पूजिते ।
स्वर्ण माले हुँ हुँ फट् फट् ठः ठः स्वाहा ।"

इस मन्त्र का साधक को तपस्वियों की भांति ग्रीष्म ऋतु में एकान्त स्थान पर अपने चारों ओर अग्नि जलाकर सिद्ध करना पड़ता है प्रतिदिन यथा विधि पूजन करके पांच हजार बार जप करते रहने से तीन मासों में सिद्धि प्राप्त होती है।

कामेश्वरी वशीकरण

"ओं ह्रीं हुँ फट् फट् कामेश्वर्ये हुं हुँ हुँ"

उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन रात में किसी वनस्थली

के ताड़वृक्ष के नीचे बैठ कर पाच हजार बार जपने से एक मास में कामेश्वरी प्रसन्न हो जाती है।

कुमारी वशीकरण मन्त्र

"ओं हुँ हुँ फट् फट् कुमारी देव्य हुँ हुं हुँ।"

उपरोक्त मन्त्र को किसी निर्जन देव-मन्दिर में रात्रि के समय प्रति रात्रि को पांच हजार बार जपने से एक मास में कुमारी प्रसन्न होकर इच्छित वरदान देती है।

धनदा वशीकरण

"ओं हुं हु फट् फट् ऐं ह्रीं श्रीधन देहि देहि ह्रीं स्वाहा।"

उपरोक्त मंत्रको प्रति रात्रिमें एकान्त पीपलके वृक्ष पर बैठकर पांच हजार बार जपनेसे एकमासमें धनदा यक्षिणी सिद्ध होकर इच्छित धन देती है।

पुत्रदा यक्षिणी वशीकरण मंत्र

"ओं ह्रीं ह्रीं हुं हुँ रं कुरु कुरु स्वाहा।"

उपरोक्त मंत्र को प्रति दिन आम के वृक्ष तले एक हजार बार जपनेसे एक मास में पुत्रदा प्रसन्न होकर पुत्र का वरदान देती है।

विद्राविणी वशीकरण मन्त्र

"ओं ह्रीं हं यँ लँ वँ रुद्रप्रिये विद्राविणी देवी ज्वल ज्वल साधय साधय कुशलेश्वरी हुं हुँ हुँ स्वाहा ।"

किसी युद्ध में मरे हुए मनुष्य की जली हुई हड्डी का चूर्ण पोटली में बांधकर गले में लटकाले और एकाँत स्थान के तिराहे पर बैठकर जप किया करे । जब यह मंत्र बारह लाख बार जप लिया जायगा, तभी विद्राविणी प्रसन्न होकर दर्शन तथा वरदान देगी ।

सिन्दूर हारिण-वशीकरण मंत्र

"ओं ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंदूर हारिणीं हुं हुं हुँ ।"

उपरोक्त मंत्र को किसी निर्जन देव स्थान में प्रति दिन पच्चीस हजार बार जपने से पच्चीस दिन में सिद्धि प्राप्त होती है ।

चेटी—वशीकरण मंत्र

"ओं हुँ हुँ ँ फट् फट् चेटी हुं हुं ।"

अपने ही द्वार पर या किसी भी निर्जन स्थान में निरंतर तीन दिन रात इस मंत्र को जपने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

१—भीम-यक्ष वशीकरण मंत्र
"ओं ह्रौं भीम वक्राय स्वाहा"

२—महावक्र-वशीकरण मंत्र
"ओं ह्रौं ह्रौं महावक्राय स्वाहा"

३—सिंह वक्र-वशीकरण मंत्र
"ओं वँ ह्रौं सिंह वक्राय स्वाहा।"

४—हयानन-वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं लँ कर्माणि साधय हयाननाय स्वाहा।"

५—"गर्दभास्य-वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं करु कर्माणि साधय गर्दभास्याय स्वाहा।"

६—महावीर वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं महावीराय स्वाहा।"

७—बहु वक्र वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं कुरु कुरु बहु वक्राय स्वाहा।"

८—गजानन वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं महा बलिने गजाननाय स्वाहा।"

९—विभ्रम वशीकरण-मन्त्र
"ओं ह्रौं विभ्रमाय स्वाहा।"

१०—बाहुक वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ह्रौं बाहुकाय स्वाहा ।"

११—वीर वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ह्रौं वीराय स्वाहा ।"

१२—सुग्रीव-वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ऐं सुग्रीवाय स्वाहा ।"

१३—रंजक वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ह्रौं रंजकाय स्वाहा ।"

१४—पिशाचस्य वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ह्रौं पिशाचस्याय स्वाहा ।"

१५—जृम्भक वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ऐं जृम्भकाय स्वाहा ।"

१६—वामक-वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं लुं वामकाय स्वाहा ।"

१७—अर्थद वशीकरण मन्त्र
"ओं ह्रौं ह्रौं अर्थदाय स्वाहा ।"

१८—जयद वशीकरण-मन्त्र
"ओं ह्रौं जयदाय स्वाहा ।"

१९—मणि भद्र वशीकरण-मन्त्र
"ओं ह्रौं ह्रौं मणि भद्राय स्वाहा ।"

२०—मनोहर वशीकरण मंत्र

"ओं ह्रौं ह्रौं मनोहराय स्वाहा ।"

उपरोक्त बीस प्रकार के मंत्रों में से कोई भी यक्ष सिद्ध करने के लिये तत्सम्बन्धी मंत्र को प्रतिदिन १००० बार जप करना चाहिये ।

चेतावनी

परन्तु साधक को स्वप्न में भी यह न भूलना चाहिये कि मैं संसार का कठिन से कठिन, भयंकर, वीभत्स दारुण और घोरतिघोर संकटमय कृत्य करने को तैयार हुआ हूँ । साधारण सा मनुष्य, पशु और पक्षी तक स्वेच्छा किसी के वश में नहीं रहना चाहते । फिर दिव्य शक्तियाँ और विशेष कर रौद्र शक्तियां साधारणतया क्यों वश में आने की ?

बीस प्रकार के यक्ष और जया, विजया, रतिप्रिया, काञ्चन कुण्डलि, स्वर्णमाला, जयावती, सुरंगिणी, विद्राविणी, डाकिनी, पिशाचिनी, अद्या विभूषिणी, परा कुण्डल धारिणी, सिन्दूर हारिणी, सिंहनी, हंसनी, नटी, चेटी कामेश्वरी, कुमारी, सुन्दरी, रतिप्रिया, यक्षिणी, धनदा, पुत्रदा, महालक्ष्मी आदि यक्षिणी के भेद प्रेतनियों के ही दूसरे नाम हैं ।

यह सभी वश्य हैं, परन्तु अत्यंत यत्न-पूर्वक साधना करने से ही वशीभूत हो सकते हैं। केवल इनके मंत्र जपने से ही काम नहीं चलता। इसके सिद्ध करने के लिये तंत्र-विद्या संबंधी ग्रंथों में क्रियायें क्रिया में दी गयी हैं वे किसी भी दशा में साधारण मनुष्य के करने योग्य नहीं। उन्हें तो वही कर सकता है जो सर्वथा एकाकी, त्यागी, आत्मजित, स्थिर, चित्त, दृढ़ासन और योगी हो।

इन साधनों के करने में बड़े-बड़े भयानक काँड देखने को मिलते हैं। और यदि उनके देखने का साहस न हुआ तो समझ लीजिये अपने ही प्राणों की कुशल नहीं। यह दृश्य मैं स्वयं दो बार अपनी आँखों से देखकर इस परिणाम पर पहुंचा हूं। एक बार—

जब लड़कपन था। यारों के कहने में आकर चल दिया भैरव सिद्ध करने के लिये। इक्कीस दिन पहले से सामग्री जोड़ते-जोड़ते दीवाली की रात आई और मैं भाई सैयद अली तथा अर्जुनसिंह अपने-अपने थाल लिये हुए जा पहुंचे मरघट में। कुछ दूर-दूर अपने-अपने कुण्डों में निहंग होकर बैठ गये और लगगये, तत्सम्बंधी क्रिया में लगभग २५-३० मिनट बाद ही एक बिलाव मेरे सामने जैसी भयंकर सूरत-शकल में आकर खड़ा

हुआ, उसका स्मरण करते ही आज भी पसीना आजाता है। मैंने सारा साहस बटोर कर उसका भोजन विधि-पूर्वक उसे दिया और वह चल दिया। मेरी घिग्घी तो वहीं से ंद हो गई। फिर भी अपने दो साथियों के बल-विश्वास पर मैं बैठा हुआ धीरे-धीरे मंत्र जपने लगा।

भगवान् जाने तब तक सैयद् भाई पर क्या बीता! कि वह एक दिन भीख मार कर नग्न दशा ही में वहां से उठ भागे। अब तो मेरे रहे-सहे होश भी गुम हो गये और जल्दी-जल्दी उठकर धोती पहन कर अर्जुन को आवाज दी। वह भी पहले ही से तैयार ही से थे। पैर हम दोनों के डिग रहे थे। सांस चल रही थी। फिर भी सैयद् के पीछे भागने की कोशिश करनी पड़ी। पता नहीं, कितनी जगह गिरे? कितने कांटे चुभे और कितनी जगह खून निकला! फिर भी हिम्मत बांध कर सैयद् को पकड़ने के लिये भागते रहे। पर सैयद् हाथ कब आये? जब हम लोग भी बस्ती में आ चुके! उनका चीखना चिल्लाना सुन कर कानिस्टिबिल दौड़ा। परंतु जब तक हम दोनों सैयद् भाई को पकड़ कर धोती लपेट चुके थे। कानिस्टिबिल ने आते ही पूछा—"क्या बात है?" मुझे एक बात सूझ पड़ी। जबाब दिया—"गाय ढूंढने निकले थे हम तीनों।

रास्ते में इनको बिच्छू ने काट लिया। तब से यह पागल की तरह चिल्ला रहे हैं।" कानिस्टिबिल से पिण्ड छुड़ा कर अमीर चाचा की आरज़ू-मिन्नत की, तब कहीं सैयद भाई को ठिकाने ला सके। थालियां सवेरे जाकर ला सके और उस दिन से कान पकड़ लिया कि अब ऐसी साधनाओं में न पड़ेंगे।

दूसरी बार—

एक जालौन जिले के गवैये को वजीफ़ा सिद्ध करने की सूझी। मुझे यह तो नहीं मालूम कि उस पर क्या बीती ? पर हां, वह पांच दिन सारे गांव में पागल सा घूमता रहा और रहीम फ़कीर के जरिये से होश में आया।

इसलिये मेरा बार-बार अनुरोध है कि इस रास्ते में सोच समझ कर कदम रखना अन्यथा सिवा धोके के कुछ भी हाथ न आयेगा।

श्रीराम-कृष्ण, शिव-पार्वती आदि की साधनायें इस लिये सहज हैं कि वे समुद्र के समान गम्भीर, पिता के समान दयालु और गुरु के समान सदैव कल्याण कारी हैं। उनकी उपासना में कभी हानि होने की संभावना है ही नहीं। और न उनके जप आदि की कोई अवधि या विशेष

बंधन । बालक को जैसे अपने माता-पिता को पुकारने का हर समय, हर जगह और हर अवस्था में अधिकार है, वैसे ही भक्त अपने इष्ट देव को कभी भी किसी भी दशा में स्मरण कर सकता है । फिर इन देवताओं के साधन का फल "इस हाथ दे, उस हाथ ले ।" के समान तत्काल ही मिलता है । वह प्रत्यक्ष आकर दर्शन भी न दें, परंतु भक्त की आकांक्षा जो उचित हो अवश्य पूर्ण कर देते हैं । भक्त की भूल पर वे अप्रसन्न भी नहीं होते । परन्तु यह यक्ष दक्षिणी, भूत, प्रेतादि तो ठीक वैसे ही समझिये, जैसे सोते हुए सांप को जगाकर पकड़ने की चेष्टा । आपका काबू चल गया तो सांप बस में हो गया और उसका दाव पड़ गया तो आपको काट लिया । अब आगे केवल प्रेत-वशीकरण का एक प्रसिद्ध मंत्र और लिखा जाता है ।

प्रेत वशीकरण

"ओं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रं फट् फट् फट् ह्रीं ह्रीं भूत प्रेत आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ठः ठः ।"

इस मंत्र को वट वृक्ष के नीचे रात्रि के समय आठ हजार बार प्रति दिन जप करने के पश्चात् दिन में विधि-पूर्वक प्रेत-पूजन करने से दो ही दिन रात में सिद्ध हो जाती है । ऐसा तंत्र वेत्ताओं ने लिखा है ।

वैमाता-वशीकरण

उक्त देवी को तभी सिद्ध करना आवश्यक होता है, जब किसी स्त्री के संतान न होती हो और होती हो तो होकर मर जाती हो।

वैमाता वशीकरण के लिये यंत्र हैं। उनमें से किसी को भी लिखने से पहले नीचे लिखे हुए शांति मंत्र को विधि-पूर्वक सवा लाख जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये।

फिर नीचे लिखे हुए यंत्रों को विधि-पूर्वक लिख कर काम में लाना चाहिए।

शांति-मन्त्र

"ओं नमः शक्ति रूपाय मृतवत्सा तथा वंध्या दोष शांति कराय अमुक गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।"

सूचना—अमुक के स्थान पर स्त्री (कि जिसे संतान की अभिलाषा हो) का नाम लेना चाहिये।

वन्ध्या दोष निवारण यन्त्र
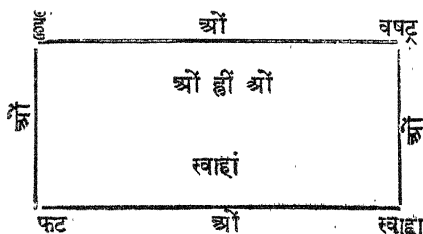
इस यंत्र को शुद्धिता-पूर्वक केशर भोजपत्र पर लिख कर बन्ध्या स्त्री के बाले में स्वर्ण या तांबे से मढ़कर पहना देना चाहिये। ईश्वर ने चाहा तो बन्ध्या दोष शाँत हो जायगा।

मृत वत्सा दोष निवारण यन्त्र

श्री	ह्रीं	क्लीं	फट	स्वा	हा
गर्भ	रक्ष	ओं	गर्भ	रक्ष	रक्ष
ह्रीं	क्लीं	श्रीं	ह्रीं	क्लीं	श्रीं

राम नवमी के दिन श्री रामचन्द्र जी की विधि-पूर्वक पूजा करके इस यंत्र को गौरोचन व चंदन से भोज पत्र पर लिखो और स्वर्ण या तांबे से मढ़कर गर्भिणी स्त्री के कण्ठ में पहना दे तो संतान सजीव होगी और होते ही अल्पावस्था में मरने की आशंका भी न रहेगी।

—: शुभमस्तु :—

मुद्रक—प्रताप प्रिंटिंग प्रेस, लाहौरी गेट, दिल्ली।